नवम्बर–२०१६ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर–२०१६

भाँति-भाँति के दृश्य देखकर,
सिर सबका चकराता है।
कहीं रेत के ऊँचे टीले,
कहीं गंग जमुन की धारा है।
प्रभु निर्माता विचित्र सृष्टि का,
सत्यार्थप्रकाश दर्शाता है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५६

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
MDH Garam masala
MDH Sambhar masala
MDH Chunky Chat masala
MDH Shahi Paneer masala
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
MDH Dal Makhani masala
MDH Kitchen King
MDH Chana masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Peacock Kasoori Methi
Hygienic, Flavourful & Tasty
NET WT. 25g
MAHASHIAN DI HATTI (P) LTD.
DEGGI
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
कार्तिक शुक्ल सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

November - 2016

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) २००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) १००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) ७५० रु.

समाचार २६

हलचल २४

०४ वेद सुधा
१० अक्षम्य को भी क्षमा
१४ सन्त कबीर ने बचाई गौ की जान
१६ महात्मा हंसराज
१८ विजय पालकी सजने दो
१६ दोहरी खेती दोहरी सफाई
२० Manusmriti
२१ दूषित और विकृत इतिहास
२२ सरमा-पणि संवाद
२४ हौसले की जीत
२७ १६वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २०१६
२८ स्वास्थ्य -शर्माना एक रोग
२६ कथा सरित- पुरुषार्थ का महत्त्व
३० प्रमुखतम राजपुरुषों की योग्यता

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०६

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२६४) २४१७६६४, ०६३१४५३५३७६, ०६८२६०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मोक्ष का वैदिक स्वरूप

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्।। -ऋ.१/५७/१; अथर्व.२०/१५/१

ऋषिः- सव्य आङ्गिरसः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः- जगती।।

मुच्लृ मोक्षणे (तृदा.प.) मोक्षण अर्थवाली मुच्लृ धातु से निष्पन्न मोक्ष शब्द का अर्थ है- छूटना अर्थात् मुक्त होना। प्रकृतिजन्य शरीर आदि बन्धन से या जन्म-मरण के चक्र से विमुक्त होना ही 'मोक्ष' का तात्पर्य है। जो कारण जीव को बन्धन में डालने वाले हैं, वेदों में उनका स्वरूप विवेचनीय है।

वेद में बन्धन का स्वरूप

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रयाथ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। - ऋग्. १/२४/१५

'जीवात्मा' को बद्ध करनेवाले तीन बन्धनों का प्रतिपादन वेदों में किया गया है- उत्तम, मध्यम तथा अधम। इन तीनों पाशों से बँधा हुआ जीव अपने को कष्टों से दुःखी अनुभव करता है, अतः उनसे छूटने के लिये परिश्रमपूर्वक अपने को निष्पाप बनाता हुआ, पाशों के स्वामी वरुणदेव से कातर स्वर में प्रार्थना करता है। मन्त्र के अनुसार उत्तम पाश- सत्त्वगुण का, मध्यमपाश रजोगुण का एवं तमोगुण का है अधमपाश। उपासक वरुणदेव से इन तीनों पाशों को ढ़ीला=शिथिल करने की याचना करता है, क्योंकि इन तीनों गुणों के वशीभूत होकर ही मानव की मनःस्थिति सम नहीं रहती। तमोगुण से भारीपन, आलस्य प्रमादवश कर्तव्यपथ में बाधक बनता है, रजोगुण अनुचित रागद्वेष में फँसाता है तथा सत्वगुण अहंकार में निमग्न रखता है। ऐसी चंचल अवस्था से दुःखी होकर साधक अखण्ड शान्ति की याचना करता है। द्वितीय रूप में मृत्यु को भी बन्धन कहा है। इसलिये वेद में इस बन्धन से छूटने के लिये प्रार्थना की गई है-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। -ऋग्. ७/५९/१२; यजु. ३/६० पूर्वार्द्ध

'हम लोग श्रेष्ठ एवं शुद्ध करने वाले, शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाने वाले रुद्र जगदीश्वर का नित्य यजन करें; लता के साथ जुड़ा हुआ जैसे ककड़ी या खरबूजा पककर मीठा हो पृथक हो जाता है वैसे ही, प्राण और शरीर के आत्मा से वियोग रूप मृत्यु से छूट जाएँ, परन्तु मोक्षरूप-अमृत से हम कभी श्रद्धा एवं विश्वास शून्य न हों।'

वेद में शारीरिक मानसिक रोगों तथा पापों को भी बन्धन का कारण स्वीकारा है, जिनमें भेड़िये के समान क्रूर-वृत्ति, छिपकर घात करना, चोरी, कुटिलता, छल-कपट, बाहर-भीतर एक न होना, पाप की प्रशंसा करना, लोभ आदि दुर्गुणों का समावेश होना है। सम्पूर्ण सूक्त में इसका विवेचन मिलता है।

अविद्यारूपी बन्धन में बँधा हुआ जीवरूप-बन्धन का कारण न जानता हुआ अनेक मानसिक विकारों से दुःखी रहता है, इसलिये मंत्र में अविद्या को भी बन्धन स्वीकार कर, ऋत्= यर्थाथज्ञान अर्थात् विद्या की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा पायी जाती है। अथर्ववेदीय मंत्र में रोगाक्रान्त व्यक्ति को सान्त्वना दी जा रही है कि 'तू डर मत, अभी नहीं मरेगा।' इसी प्रकार ऋग्वेद के मृत्यु देवता वाले चार मंत्रों में मृत्यु से बचने के उत्साहवर्धक साधनों का निर्देश करते हुये दीर्घ आयु की कामना की गयी है।

इस प्रकार रोग, शोक, मोह आदि के अनेकविध बन्धन वेद में दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु उन सब बन्धनों का विश्लेषण यहाँ अपेक्षित नहीं। इसलिये प्रसंगवश हम उसी साक्षात् बन्धन का उल्लेख करेंगे जो जीव को जन्म-मरण के चक्र में बाँधता है।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाऽभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः। - योग. २/३

वैदिक संहिताओं के बन्धन के स्वरूपों को योगदर्शनकार ने सूत्र में इस प्रकार निबद्ध किया है- अविद्या, अस्मिता अंहकार= राग, द्वेष, अभिनिवेश= मृत्यु का भय-इन्हीं पंच क्लेशों के वशीभूत प्राणी बन्धन की अनुभूति करता हुआ इनसे मुक्त होने की अभिलाषा

करता है।

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्। - योग. २/४

आगे सूत्रकार ने इन पाँचों में से केवल अविद्या को ही मूलक्लेश बन्धन मानकर उससे छुटकारा पाने के लिये प्रेरित किया है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश इन चारों क्लेशों का मूल है। इस मूल को समाप्त कर दिया जाए तो अविद्यासहित पाँचों क्लेशों से मुक्ति मिल जायेगी।

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तराऽपाये तदनन्तरापायादपवर्गः। - न्याय. १/१/२

न्यायदर्शनकार गौतममुनि ने वेद के उपर्युक्तभाव को सूत्र में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है कि- 'मिथ्याज्ञान (अविद्या) ही दुःखस्वरूप बन्धन का कारण है। इसलिये मिथ्याज्ञान की ही निवृत्ति से अपवर्ग= मोक्ष होगा। क्योंकि मिथ्याज्ञान की निवृत्ति से दोष-राग-द्वेष नहीं रहेगा। राग-द्वेष के अभाव में कर्म में प्रवृत्ति नहीं होगी, प्रवृत्ति के अभाव में जन्म नहीं होगा और जन्म के अभाव में दुःख नहीं होगा। आत्यन्तिक दुःख से छूटना ही मुक्ति का स्वरूप है।

न्याय-वैशेषिक में बन्धनों की अन्यत्र गणना इस प्रकार की गयी है-

१. ऋणानुबन्धन- पितृ-ऋण, ऋषि-ऋण एवं देव-ऋण ये जीवन के साथ ही आते हैं। इन तीनों ऋणों से उऋण हुए बिना मुक्ति नहीं हो सकती।

२. क्लेशानुबन्धन- सैकड़ों दोषों से युक्त मानव, जीवन में प्रयास करने पर भी दोषों को दूर नहीं कर पाता, अतः मुक्ति के लिये विचार करने का अवसर ही कहाँ?

३. प्रवृत्त्यनुबन्धन- कर्म करने की जन्मजात प्रवृत्ति मनुष्य को क्षणभर भी ठहरने नहीं देती। कर्म करते हुए फलासक्ति बन्धन का कारक बनती है।

४. कर्मफलानुबन्धन- मानव को शुभाऽशुभ कर्म करके उनका शुभाऽशुभ फल अवश्य भोगना पड़ता है। पूर्वकर्मों का भोग अन्य कर्मों की ओर प्रवृत्त करता है। इन्हें भोगने के लिए जन्म लेना अनिवार्य होकर बन्धन का हेतु है।

न्यायशास्त्र में आगत ऋणरूप-बन्धन वेद से ही लिया गया प्रतीत होता है, क्योंकि अथर्ववेद में ऋण को बन्धन स्वीकार किया गया है और ऋण से मुक्त होने की प्रार्थना की गयी है कि-

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान्पथो अनृणा आ क्षियेम॥ - अथर्व. ६/११७/३

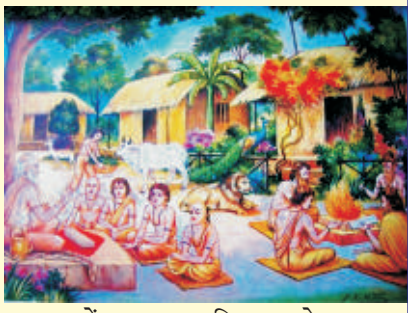

'हे परमात्मन्! हम इस, उस और तृतीय लोक में ऋण रहित रहें। संसार में देवयान के पथिक हों चाहे पितृयान के, सर्वत्र ऋण-रहित होकर ही विचरें, जिससे कि हम मुक्ति के अधिकारी बन सकें।

तैत्तिरीय संहिता के अनुसार उत्पन्न होनेवाला ब्राह्मण तीन ऋणों से ऋणवान् हो जाता है, वे हैं- ऋषि-ऋण, देव-ऋण, पितृ-ऋण। अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय-प्रवचन आदि से वह ऋषि-ऋण से उऋण होता है; यज्ञादि शुभ कर्मों से वह देव-ऋण से उऋण हो सकता है तथा गृहस्थ में जाकर सन्तति-क्रम को चलाकर पितृ-ऋण से उऋण होता है। इस प्रकार तीनों ऋणों से उऋण होकर जीवन मुक्त होकर विचरे।

दुष्टाचरण, असत्यभाषणादि दोषों को दूर करने के लिये वेद में स्थान-स्थान पर संकेत एवं प्रार्थनाएँ की गयी हैं, अतः वेद की सम्मति में मिथ्याचार आदि दोष भी मानव को उत्कर्ष की ओर नहीं ले जाते, वे सभी बाधक ही हैं। कर्म की दृष्टि से सम्पूर्ण यजुर्वेद कर्म का सन्देश देता है तथा अन्त में, फलासक्त न होकर कर्म करने का उपदेश देना वेद की आन्तरिक अनुभूति का ज्ञापक है। वेद कर्म को बन्धन का कारण स्वीकार करता है तथा निष्काम भावना से कार्य करने के द्वारा कर्म में लिप्त न होने को कहता है। मुक्ति का यही उत्तम मार्ग है क्योंकि जन्म लेकर सर्वथा कर्मरहित रहना असम्भव है।

वेद का कर्मफल-सिद्धान्त सुदृढ़ है कि- 'आत्म-हनन करनेवाले, जड़ प्रकृति की उपासना करनेवाले तथा अविद्या आदि को प्रश्रय देनेवाले केवल मनुष्य बनकर ही जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ते वरन् निकृष्ट योनियों में जाकर, अविद्या-अन्धकार में जा गिरते हैं।

उक्त वैदिक विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय आर्ष दर्शनों में जो बन्धन के स्वरूपों का प्रतिपादन किया गया है वह वैदिक संहिताओं से ही सामञ्जस्य रखता है। इस प्रसंग में यह ध्यान देने योग्य है कि दर्शनों की नवीन विचारधारा की समानता वैदिक सिद्धान्तों से नहीं की जा सकती, क्योंकि वे धारणाएँ निज मत या पन्थ को पूर्वाग्रह में रखकर संकलित की गयी हैं।

- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी
साभार- वेदों में योग विद्या

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

यहाँ आकर आर्य समाज के बारे में समस्त जानकारी प्राप्त कर एवं देश को आजादी दिलाने वालों के चित्र देखकर मन को प्रसन्नता हुई। काश मेरा भी जन्म उस दौरान ही हुआ होता तो मुझे भी इनके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता। अति सुन्दर साज सज्जा एवं रखरखाव देखकर मन आनन्दित हो गया।

– ईश्वर सिंह, झून्झूनू

अद्‌भुत, अतुलनीय प्रदर्शनी है।

– ओम प्रकाश जी, अधिष्ठाता– प्रताप गौरव केन्द्र, उदयपुर

महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विश्व विख्यात् कालजयी ग्रन्थ रत्न सत्यार्थप्रकाश की रचना इस पावन स्थल पर की। यहाँ आकर अत्यन्त हर्षानुभूति हुई।

– ओम प्रकाश सिंह, जयपुर

ऐसी जानकारी कहीं पर नहीं मिलेगी और सत्यता के प्रति सबको इसे जान लेना आवश्यक है। बहुत ही प्रेरणास्पद एवं लाभदायक जानकारी मिली। बहुत-बहुत धन्यवाद

– संजय गोरे, मुम्बई

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्कर्मों से सुख मिलता,
है, संघर्ष से पहचान।
प्रेम, दया और परोपकार,
से पूरे होते सब अरमान।।

सत्यार्थ सौरभ
घर–घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१		ग्नि १		२		ह २			३	न्न
		४	ति	४			५		ण्डी ५	
६ स		६			७	लि	७	श्व		७ व

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. बलिवैश्वदेव यज्ञ के अन्तर्गत आहुतियाँ किसमें दी जाती हैं?
२. बलिवैश्वदेव यज्ञ के अन्तर्गत अतिथि के निमित्त भोजन के कितने भाग निकाले जाते हैं?
३. 'पतितेभ्यो नमः' में नमः का क्या अर्थ है?
४. जिसके आगमन की कोई तिथि निश्चित नहीं उसे क्या कहते हैं?
५. वेद-निन्दक, वेद विरुद्ध आचरण करने वाले को क्या कहते हैं?
६. ज्ञान-विज्ञान के प्राप्त्यार्थ अतिथि विद्वानों के साथ क्या करना चाहिए?
७. भोजनादि बनाने में जो अज्ञात-अदृष्ट जीवों की हत्या होती है उसके प्रत्युपकार हेतु कौनसा यज्ञ करें?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ९/१६ का सही उत्तर

१. देव २. कल्याण ३. सत्कार
४. प्रिय ५. गुण ६. शुष्क वैर
७. हितकारक ८. निन्दा

''विस्तृत नियम पृष्ठ १३ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०१६

संयुक्त राष्ट्र संघ ने २५ नबम्बर को महिलाओं के विरुद्ध हो रहे हिंसात्मक अपराधों से विश्व को मुक्त करने का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया हुआ है। इतिहास बताता है उन तीन बहिनों पेट्रिया, मिनर्वा तथा मार्फा मिराबेल के डोमिनिक राज्य के क्रूरतम तानाशाह राफेल ट्रूजीलो के विरुद्ध अनन्त संघर्ष की गाथा जिसका अंत इन तीनों बहिनों की हत्या के साथ हुआ। ये तीनों बहिनें यूँ किसी भी दृष्टि से असाधारण नहीं थीं, सामान्य जीवन, अपने पति, अपने बच्चे यही उनका संसार था। पर क्रूर तानाशाह के अत्याचारों ने इन्हें इतना हिला दिया कि उसके पतन के लिए उसके विरुद्ध गुप्त आन्दोलन इन बहिनों ने प्रारम्भ कर दिया। देर-सवेर ट्रूजिलो को पता चलना ही था, पता चला। इनके पतियों को जेल में डाल दिया गया। फिर भी इन्होंने अपने कदम वापस नहीं खींचे। २५ नवम्बर १९६० को जब ये तीनों बहिनें अपने पतियों से मिलने जेल जा रहीं थीं इस क्रूर तानशाह के आदेश पर उन्हें पहिले पीटा गया, पुनः गन्ने के खेत में इनके शरीरों को काटकर, फिर जीप में रखकर जीप को धक्का देकर खाई में धकेल दिया गया ताकि इसे लोग दुर्घटना ही मानें। परन्तु इस क्रूर तानाशाह की चालों से डोमिनिक राज्य के लोग अच्छी तरह परिचित थे। किसी से छिपा न रहा कि मिराबेल बहिनों की हत्या की गयी है, नतीजतन जनता में आक्रोश गहरा गया और तीनों बहिनों के बलिदान का अंततः परिणाम यह रहा कि डोमिनिक की जनता ने विद्रोह कर ट्रूजिलो को मारकर उस रास्ते को प्रशस्त कर दिया जिस पर चलकर डोमिनिक गणराज्य के रूप में विश्व के समक्ष आया। महिलाओं के इस साहसिक बलिदान को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मान्यता प्रदान की यह प्रसन्नता की बात है।

इस सन्दर्भ में जब हम भारत की बात करते हैं तो महिलाओं की एक लम्बी सूची दृष्टिगोचर होती है जिन्होंने देश, समाज, राष्ट्र के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। गत अंक में हमने एक लेख आकांक्षा यादव जी का दिया था जिसमें कुछ सन्नारियों के योगदान का जिक्र-मात्र था जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ लुटा दिया।

केवल राजनीतिक कारणों से हिंसा होती हो ऐसा नहीं है। महिलाओं के विरुद्ध तो अनेक प्रकार की हिंसा प्रत्यक्ष देखने में आती हैं जिनमें बलात्कार एक ऐसी हिंसा है जो केवल शरीर को ही नहीं दिल-दिमाग और आत्मा को भी घायल करने के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा को भी चूर-चूर कर देती है। भारत में स्थिति और भी गंभीर है यह इसलिए नहीं कि बलात्कार केवल भारत में होते हैं (बलात्कार तो विश्व-व्यापी अपराध है) वरन् इसलिए कि भारत में ही प्रायः शिकार को ही दोषी मान लिया जाता है। पहले से ही टूटन की कगार पर बैठी महिला/किशोरी को ही कृत्य का दोषी मानकर सामाजिक प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है तथा उसे ही अनेक प्रतिबन्धों से रूबरू होना पड़ता है। सहानुभूति दिखायी भी जाती है तो इस प्रकार कि वह गाली से भी बदतर लगती है। पारिवारिक बलात्कारों के मामलों में तो विशेष रूप से शिकार को ही दबाया जाता है क्योंकि शिकारी परिवार का कोई दबंग सदस्य होता है। इन सब कारणों से बलात्कार की शिकार अनेक बार अपनी शिकायत भी अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत नहीं करतीं और अपराधी बेखौफ घूमते रहते हैं। पर अनेक महिलाएँ फौलाद की बनी होतीं हैं वे इन समस्त विपरीत परिस्थितियों का इस दृढ़ता से सामना करतीं हैं कि सारे संसार के लिए प्रेरणा बन जातीं हैं।

सुनीता कृष्णन एक ऐसा ही व्यक्तित्व है। पूर्व जन्म के संस्कार थे अथवा कुछ और, बचपन से ही जैसे यह बालिका परोपकार

के लिए ही जन्मी थी, वह भी उस तबके का पुनरुद्धार करने, जो शोषित भी था और वंचित भी। बेंगलुरू में जन्मी डॉ. सुनीता कृष्णन की जिंदगी बहुत जटिलताओं से भरी रही है। समाजसेवा के प्रति उनके जज्बे का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि वे आठ साल की उम्र में ही मानसिक रूप से कमजोर बच्चों को नृत्य सिखाने लगी थीं। जब वह महज १२ साल की थीं, तो हैदराबाद की झुग्गी-झोंपडियों में रहने वाली बच्चियों को पढ़ाने का बीड़ा उठा लिया। १५ साल की उम्र तक आते-आते सुनीता ने दलित बच्चियों के उद्धार के लिए काम करना शुरू कर दिया था और इसी समय इनके जीवन में वह भयानक हादसा हुआ

जिसने इनकी जिन्दगी को एक नयी दिशा दी। आठ गुंडों ने सुनीता का अपहरण करके उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। पर इस घटना से टूटने की बजाय सुनीता ने दृढ़ निश्चय के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन ही अपनी जैसी बलात्कार की शिकार महिलाओं के रक्षण हेतु लगा दिया। यह सब इतना आसान काम नहीं था। शायद ही कोई महिला होगी जो अपने साथ हुए बलात्कार के बारे में दुनिया को बताना चाहेगी। लेकिन डॉ. सुनीता कृष्णन ने न सिर्फ अपने साथ हुई ज्यादती के बारे में सबको बताया, बल्कि उस लड़ाई को भी नहीं छोड़ा, जिसके कारण उनका गैंगरेप किया गया था। हजारों लड़कियों की जिंदगी में रोशनी की किरण बनकर आई सुनीता को उनके महान् कार्य के लिए अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। डॉ. सुनीता कृष्णन जो अदम्य साहस से भरपूर हैं, बिल्कुल निडर हैं। इसी साहस और निडरता की वजह से वे मानव तस्करी जैसे बड़े संगठित अपराध को खत्म करवाने के लिए जी-जान लगाकर लड़ रही हैं। सुनीता के ऊपर अब तक समाज कंटकों के द्वारा १४ बार हमले किये जा चुके हैं। एक बार तो इनके आटो को एक टाटा सूमो ने कुचलने की कोशिश की, एक बार इन पर एसिड अटैक किया गया एक अन्य अवसर पर जहर देने की कोशिश की, परन्तु राक्षसों के चंगुल में फँसी हजारों लड़कियों की उम्मीद तथा गर्म गोश्त के सौदागरों के चंगुल से सुनीता द्वारा बचायी तथा अपने पैरों पर खड़ी की गयी महिलाओं की दुआओं ने सुनीता को हर बार बचा लिया।

हैदराबाद में 'महबूब की मेंहदी', नाम का एक रेड लाईट क्षेत्र जब खाली कराया गया तो सहस्रों महिलाओं के समक्ष पुनर्वास की समस्या उत्पन्न हो गयी। तब सुनीता ने 'प्रज्ज्वला' नामक संस्था की स्थापना की तथा वहीं इन अभिशप्त महिलाओं की अगली पीढ़ी को इस नरक से बचाने के लिए इनके बच्चों को पढ़ाने का उद्यम प्रारम्भ कर दिया।

'प्रज्ज्वला' आज इस मुकाम पर है कि अब तक ८००० से अधिक बच्चियों को दरिंदों के चंगुल से मुक्त करा चुकी है, जिनकी उम्र दस साल से कम थी। सुनीता की बात करें तो औसतन उन्होंने हर साल १२८ बच्चियों को आजाद कराया यानी औसतन हर तीन दिन में एक बच्ची। मानव तस्करी और देह व्यापार विरोधी यह संस्था अब तक लगभग १२००० महिलाओं को भी कोठों, मानव तस्करों और बलात्कारियों के शिकंजे से निकाल चुकी है। अब तक २०००० बच्चियों और महिलाओं को सुनीता की संस्था ने नई जिंदगी दी है।

शारीरिक ऊँचाई की बात करें तो जरूर सुनीता को शायद बौनी कहा जा सकता है, परन्तु जहाँ तक हौसलों का सवाल है वे उतनी ही बुलंद हैं। सुनीता नारी उपभोगवाद के सख्त खिलाफ हैं। १९९६ में जब बैंगलोर में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था तो सुनीता ने नारी देह प्रदर्शन का जम कर विरोध किया था परिणामस्वरूप इनको २ महीने के लिए जेल में बंद कर दिया गया। जेल से आने के बाद इनके माता-पिता ने भी इनको समझाया कि काँटों से भरा यह रास्ता छोड़ दे, पर सुनीता पीछे हटने को तैयार नहीं थीं।

प्रज्ज्वला में २०० से ज्यादा लोग कार्य करते हैं पर सुनीता अवैतनिक ही हैं। अपने खर्चे के लिए वे अपने फिल्मकार पति राजेश तथा अपने लेखन, अपनी संगोष्ठियों से होने वाली आय पर निर्भर हैं। देश-विदेश में सहस्रों संगोष्ठियाँ कर चुकीं सुनीता अपने अनुभव बाँटने में भी पीछे नहीं रहतीं पर वे कहतीं हैं -

I do not remember the rape part of it as much as I remember the anger part of it ..... I derive power from that anger.

भारत में अजीब बात यह है कि बलात्कार की शिकार निरपराध महिला शर्मिंदगी और सामाजिक प्रताड़ना का शिकार होती है बलात्कारी नहीं। सुनीता के हाथ जब एक ऐसा वीडिओ लगा जिसमें सामूहिक बलात्कार कर रहे बलात्कारी बड़ी शान से अपना चेहरा प्रदर्शित कर रहे थे जैसे महान् कृत्य कर रहे हों तो सुनीता ने Shame the rapist के नाम से अभियान

चलाया और पीड़िता का चेहरा धुँधला करके यू-ट्यूब पर वीडियो अपलोड कर अपील की कि रेपिस्ट को पकड़वाने का प्रयत्न करें। पर बाद में पुलिस केवल एक को ही पकड़ पायी तो सुनीता ने सुप्रीम कोर्ट का सहारा लिया। सुनीता के इस अभियान की कई कारणों से आलोचना भी की जा रही है परन्तु सुनीता का कहना है कि वे आलोचनाओं की परवाह नहीं करतीं। जो भी हो सुनीता अत्यन्त निडरता के साथ अपने रास्ते पर डटी हुयीं हैं उन्हें अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। २०१६ में समाज-सेवा के क्षेत्र में अभिनव योगदान प्रदान करने के उपलक्ष्य में इन्हें पद्मश्री से समानित किया गया है।

प्रज्ज्वला के अतिरिक्त अन्य भी संगठन हैं जो महिलाओं पर हो रहे अपराधों की रोकथाम के लिए कार्य कर रहे हैं।

आकाश भारद्वाज एक ट्रेवल एजेंसी चलाते हैं। वे बताते हैं कि एक बार उन्हें एक महिला गुब्बारे बेचती दिखी जिसके चहरे पर एसिड अटैक के निशान थे। पूछने पर उसने अपनी दर्द भरी कहानी बताई। वह एक मॉल में सुरक्षा प्रभारी का काम करती थी। उसके पड़ोस में रहने वाले एक लड़के ने उसपर एसिड डाल दिया। बदसूरती के कारण पति ने छोड़ दिया। अपना और अपने दो बच्चों का पालन करने के लिए उसे नौकरी चाहिए थी पर चेहरा खराब हो जाने के कारण कोई ढंग की नौकरी नहीं मिली। आकाश ने तभी निश्चय कर लिया कि वे अपनी 'खास' नाम की ट्रेवल एजेंसी में ऐसी हिंसा की शिकार महिलाओं को ही नौकरी देंगे। आज उनके पास ऐसी हिंसा की शिकार ५ महिलाएँ काम करती हैं। उदयपुर में भी एक माल में संचालित कैफे में भी एसिड अटैक की शिकार लड़कियों को ही काम पर रखा गया है। यह सब हिंसा की शिकार इन महिलाओं के पुनर्वास के अत्यन्त पुण्यकारी प्रयास हैं।

यहाँ यह बात अंकित कर देना समीचीन होगा कि अत्याचार, हिंसा और बलात्कार की शिकार महिलाएँ केवल भारत में हो रहीं हैं ऐसा नहीं है। इस सम्बन्ध में विकसित, अविकसित कोई देश पीछे नहीं है। एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार सम्पूर्ण भूमंडल पर हर तीन में से एक महिला ऐसी होती है जिसे जीवन में कभी न कभी अपने औरत होने का अभिशाप भुगतना पड़ता है और हिंसा का शिकार होना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसीलिए २५ नवम्बर से लेकर १० दिसंबर तक १६ दिन तक विभिन्न माध्यमों से औरतों पर होने वाले अत्याचारों के प्रति सजग होने तथा उनके रोकथाम के उपाय करने का प्रयास किया है। नारंगी रंग को इसका प्रतीक बनाया गया है। इस दिन भारत में भी दिल्ली में इण्डिया गेट को नारंगी प्रकाश से नहला कर औरतों के प्रति हिंसा के व्यवहार को पूर्णतः त्याग देने का सन्देश दिया जाता है। आश्चर्य है कि भारत जैसे देश में जहाँ देवियों की मूर्ति बनाकर उन्हें दुष्ट-विनाशक तथा शक्ति का स्वरूप मानकर पूजा जाता है, जहाँ उनको पुरुष के बराबर ही नहीं, उनसे ऊँचा दर्जा दिया गया है वहाँ महिलाओं के प्रति हिंसात्मक व्यवहार बढ़ता जा रहा है।

महिलाओं के प्रति हिंसा गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाती है। कन्या भ्रूण हत्या की घटनाएँ विकृत तथा क्रूर मानसिकता की द्योतक हैं। तकनीकी ज्ञान का उपयोग क्रूर कर्म करने के लिए किया जाता है। लिंग परीक्षण के द्वारा यह ज्ञात होने पर कि गर्भ में कन्या है, उसका अबोर्शन करवा दिया जाता है। आश्चर्य है कि इस दुष्कर्म में घर की बड़ी महिलाएँ भी सम्मिलित होतीं हैं। यद्यपि लिंग निर्धारण को गंभीर अपराध की श्रेणी में ला दिया गया है फिर भी अनेक चिकित्सक आज भी इसे अंजाम दे रहे हैं। जब जन्म के पश्चात् लड़की बड़ी होती है तो रहन-सहन, पढ़ाई आदि अनेक सन्दर्भों में उसके साथ भेदभाव होना कोई अनजाना तथ्य नहीं है। पूरे जीवन, जी हाँ शैशव अवस्था से जरावस्था तक यौनिक हिंसा का भय उसके समक्ष रहता है। जिस देश में स्वयंवर विवाह को श्रेष्ठ माना जाता था वहाँ वह अपनी मर्जी से विवाह कर सके, ऐसा वातावरण प्रायः नहीं मिलता बल्कि परिवार के सम्मान के नाम पर मर्जी से विवाह करने वाली लड़की के हिस्से में क्रूर हत्या आती है। दहेज के नाम पर जलाकर अथवा अन्य प्रकार से हत्या अनजानी नहीं हैं। घर में पीटने की कथा तो कहनी ही क्या। यह है स्थिति। परन्तु मानवता का तकाजा यही है कि इसपर पूर्ण विराम लगाना होगा। इस सब के कई कारण भी हैं। समाज शास्त्रियों को उनका निदान करना होगा। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि प्राचीन भारत के आदर्श को सामने रखना होगा। मनु तथा दयानन्द की व्यवस्थाओं को स्मृत रख आचरण में ढ़ालना होगा।

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

अक्षम्य को भी क्षमा करने से ही संभव है भयंकर आंतरिक पीड़ा से मुक्ति

सीताराम गुप्ता

जब कोई गलती करता है तो कुछ लोग उसे दण्ड देने के पक्ष में होते हैं तो कुछ क्षमा कर देने के पक्ष में। कुछ लोग क्षमाशील होते हैं तो कुछ क्षमा करना और क्षमा माँगना बिल्कुल नहीं जानते। क्षमा का अपना महत्त्व है। यदि क्षमा का महत्त्व नहीं होता तो स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने रसोइये को जिसने उन्हें विष दे दिया था क्यों क्षमा करते और भागने में उसकी मदद करते? ये ठीक है कि महान् व्यक्ति ही क्षमाशील होते हैं लेकिन ये भी सत्य है कि क्षमा करने वाला भी महान् हो जाता है। ये ठीक है कि भयंकर अपराध करने की स्थिति में दण्ड देना अनिवार्य है लेकिन क्षमा का अपना महत्त्व है। कई लोगों को अपराध करने पर न्यायपालिका द्वारा दण्ड मिलने के बावजूद हम उन्हें क्षमा नहीं कर पाते। हाँ अपने निकटस्थ संबंधियों, परिचितों व मित्रों को उनके भयंकर अपराध के बावजूद हम सभी लोग उन्हें क्षमा करने में देर नहीं लगाते। यह वास्तविक क्षमा नहीं आपसी संबंधों का निर्वाह मात्र है। इसे मजबूरी अथवा अपनों के प्रति राग व मोह भी कह सकते हैं।

वास्तविक क्षमा वहाँ होती है जब हम बिना राग-द्वेष के किसी अपरिचित को भी उसके किसी बड़े अपराध के लिए भी क्षमा कर देते हैं। यदि आप किसी को क्षमा कर देते हैं तो इसका ये अर्थ नहीं कि न्यायपालिका उसे उसके अपराध के लिए दण्ड नहीं देगी। हमारी क्षमा से न्यायपालिका का कार्य अप्रभावित रहता है। बहुत सारे लोग हमारे जीवन में आते हैं और कुछ लोग अचानक हमारे जीवन को तबाह कर डालते हैं। आस्ट्रेलियाई मिशनरी ग्राहम स्टेंस और उनके दो

नाबालिग बच्चों को जिंदा जला डालने की घटना संभव है आपको याद हो। २२ जनवरी सन् १९९९ को उड़ीसा के क्योंझर जिले के मनोहरपुर गाँव में एक चर्च के बाहर वैन में सोते हुए ग्राहम स्टेंस और उनके दो नाबालिग बच्चों को जिंदा जला डाला गया था। लोअर कोर्ट ने इस केस के प्रमुख आरोपी हत्यारे को फाँसी की सजा सुनाई थी। बाद में हाई कोर्ट ने इसे उम्र कैद में बदल दिया। सुप्रीम कोर्ट ने भी सजा बढ़ाने की बजाय हाई कोर्ट द्वारा दी गई उम्र कैद की सजा को ही बरकरार रखा। ग्राहम स्टेंस की पत्नी ग्लेडिस स्टेंस जिन्होंने अपने पति और दोनों मासूम बच्चों को खो दिया था उनकी क्या मानसिक स्थिति रही होगी आप बखूबी अंदाजा लगा सकते हैं। उनके मन में पीड़ा, पीड़ा से उत्पन्न क्रोध व प्रतिशोध की भावना होना अस्वाभाविक नहीं लेकिन उन्होंने अपने पति व बच्चों के हत्यारे को क्षमा कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उन्होंने कहा कि हर इंसान को अपनी जिंदगी जीने का एक और मौका मिलना चाहिए। हम खुश हैं कि इस मामले में न्याय हो गया।

कितना मुश्किल है अपना जीवन नष्ट कर देने वाले को क्षमा कर देना लेकिन जो ऐसा कर सकता है वह सचमुच महान् है। वह सामान्य व्यक्ति के मुकाबले में बहुत ऊँचा उठ जाता है। स्वाभाविक है कि व्यक्ति ऐसा तभी कर सकता है जब वह अपनी सारी पीड़ा, अपनी समस्त आन्तरिक कटुता को त्याग देता है, उसे भुला देता है। अक्षम्य को क्षमा करके व्यक्ति न केवल ऊँचा उठ जाता है अपितु भयंकर व घातक आंतरिक पीड़ा से भी मुक्त हो जाता है। जब तक वह क्षमा रूपी आयुध का प्रयोग नहीं करता भीतर ही भीतर सुलगता रहता है, घुटता रहता है। किश्तों में मरता रहता है। जीवन जीने की बजाय मात्र शरीर के बोझ को ढ़ोता फिरता है। बहुत मुश्किल है अपनों के बिछोह से उत्पन्न पीड़ा से मुक्ति लेकिन वास्तविकता यही है कि जो इस पीड़ा को देने वाले को क्षमा कर सकता है वही मुक्त हो सकता है। और कोई उपाय है ही नहीं। क्रोध व प्रतिशोध की भावना इसे कम करने की बजाय बढ़ाती ही है।

जीवन प्रवाह में हम सब गलतियाँ करते रहते हैं। अपराध भी हो जाते हैं। लेकिन सोच कर देखिए क्या समाज ने, लोगों ने उसके लिए हमें कभी क्षमा नहीं किया? अवश्य किया होगा। हम स्वयं के दोषों को और दूसरों की क्षमा को भूल जाते हैं। हमें याद रहते हैं तो दूसरों के दोष। उनके सामान्य दोष भी अपराध लगते हैं। ऐसे विचारों को बदल कर देखिए। दूसरों की गलतियों को नजरअंदाज कर उन्हें भूलना, क्षमा करना सीखिए। जीवन सचमुच बदल जाएगा। मानसिक पीड़ा दूर हो जाएगी तो शरीर का बोझ भी कम हो जाएगा। इसे ढ़ोने से मुक्ति मिल जाएगी। आदर्श यही है कि अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। शत्रुओं से प्यार करने का क्या मतलब है? शत्रु कौन है? जो पीड़ा दे, द्वेषपूर्ण व्यवहार के कारण जिसे हम पसंद न करें वही तो शत्रु है। शत्रुता का कोई कारण होता है। उस कारण को क्षमा द्वारा ही भूल सकते हैं। क्षमा द्वारा ही शत्रु को प्यार करना संभव है।

ए डी-१०६-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

मैं दयानन्द का सैनिक हूँ।
मैं आर्य मन्दिरों की कारा में आज बन्द हूँ।
मैं दयानन्द का सैनिक हूँ।।
मुझे ज्ञान की घुट्टी मिली है इस मन्दिर के अन्दर।
पर उसका कब उपयोग हुआ मन्दिर के बाहर।।
कहते हैं लोग मैं ज्यादा ही कुछ अक्लमन्द हूँ।
मैं दयानन्द का सैनिक हूँ।।
था दयानन्द ने वेद को माना सब से ऊँचा।
पर मैंने माना है कुर्सी को कब से ऊँचा।।
कोई और नहीं मैं अपने गले का आप फन्द हूँ।

मैं दयानन्द का सैनिक हूँ।।
अब सत्संगों में मुझे अंगुलियों पर गिन लीजे।
उनमें भी अब बूढ़ों-बूढ़ों के दर्शन कीजे।।
जो हैं वरिष्ठ अब उन की मैं पहली पसन्द हूँ।
मैं दयानन्द का सैनिक हूँ।।
कुछ भी हो फिर भी सैनिक हूँ मैं दयानन्द का।
इक बार मेरी आँखों में उसका तेज जो चमका।।
फिर तो सिर से पाओं तक 'अरुण' मैं दयानन्द हूँ।
मैं आर्य मन्दिरों से निकलूँ। क्यों यहाँ बन्द हूँ।।

- विजय अरुण, ठाणे महाराष्ट्र

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १३ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

स्त्री शिक्षा और दयानन्द

आज २१ वीं सदी के भारत में जिन बच्चों ने अपनी आँखें खोली हैं वे केवल २०० वर्ष पूर्व तक भारत की आधी आबादी अर्थात् महिलाओं की क्या स्थिति थी, इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। एक उपन्यास 'प्रथम प्रतिश्रुति' बहुत पहले पढ़ा था जिस पर दूरदर्शन ने एक धारावाहिक भी बनाया था, उसमें नारी जगत् की तत्कालीन स्थिति का जो सजीव वर्णन किया था वह ही वास्तविकता थी। पढ़ना तो दूर की बात उन्हें अक्षर-ज्ञान का भी अधिकार नहीं था। घर ही उनका कार्य क्षेत्र था, वहाँ भी सैंकड़ों अन्यायपूर्ण बंदिशें।

बाल-विवाह सामान्य बात थी, फलस्वरूप विधवाओं की बढ़ती संख्या और उन पर अमानुषिक दिल दहला देने वाले अत्याचार। इसके कुछ तो ऐतिहासिक कारण रहे परन्तु मुख्य कारण शास्त्रों के सन्दर्भ से 'महिला दोयम ही है और यह ईश्वरीय व्यवस्था है' इस धारणा को समाज में बद्धमूल कर देना था। जहाँ तक शास्त्रों, विशेषरूप से वेद का प्रश्न था उन्हें देखा किसी ने न था। जन सामान्य की तो कौन कहे पंडित वर्ग ने भी वेद के दर्शन भी नहीं किये थे पर दावा समाज के कर्णधारों का यही होता था कि नारी की यही स्थिति रहनी चाहिए क्योंकि वेदशास्त्रों में उनके लिए यही व्यवस्था है। पाठकों को आश्चर्य होगा कि आचार्य शंकर जैसा महात्मा भी इस धारणा से पृथक् नहीं रह सका और उन्होंने **'नारी नरकस्य द्वारं'** जैसी वेद की आत्मा से प्रतिकूल व्यवस्था देने में हिचकिचाहट महसूस नहीं की, ऐसे में संभवतः तुलसी के 'ढोल-गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताडन के अधिकारी' की चर्चा करना तो बेमानी होगा। इसी के चलते सती प्रथा जैसी कुरीति ने भी पैर पसार लिए थे। अनेक महापुरुषों ने अपने-अपने तरीके से इन कुरीतियों को दूर करने की कोशिशें कीं परन्तु वेदज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण वेद में वर्णित नारी की सही स्थिति को वे चित्रित नहीं कर सके। ऐसी स्थिति में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती हमें ऐसे मिलते हैं, जिन्होंने नारी की स्थिति के सन्दर्भ में वेदाज्ञा को प्रमाणपूर्वक प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि उपरोक्त कुरीतियों का लेश भी वेद में नहीं मिलता।

महर्षि की विशेषता यह थी कि उन्होंने केवल वेद शास्त्रों की बात नहीं की, वरन् प्राकृतिक न्याय तथा इतिहास की कसौटी पर भी इन कुरीतियों के औचित्य-अनौचित्य को कसा। इस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के निम्न अवतरण को उद्धृत करना समीचीन होगा।

(प्रश्न) क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें? जो ये पढ़ेंगे तो हम फिर क्या करेंगे? और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नही जैसा यह निषेध है -

स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

(उत्तर) सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम कुँआ में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है, किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। और सब मनुष्यों के वेदादिशास्त्र पढ़ने-सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मंत्र है -

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च॥

परमेश्वर कहता है कि- यथा=जैसे मैं, जनेभ्य=सब मनुष्यों के लिये, इमाम्=इस, कल्याणीम्=कल्याण अर्थात् संसार और मुझको सुख देनेहारी, वाचम्=ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का, आवदानि=उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो। .....अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर, विज्ञान को बढ़ा के, अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों को त्यागकर, अनावश्यक दुःखों से छूटकर, आनन्द को प्राप्त हों। कहिये, अब तुम्हारी बात मानें वा परमेश्वर की।

परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि **'नास्तिको वेदनिन्दकः।'** वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिये निषेध

"सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है।"

और द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता। जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य्य और अन्नादि पदार्थ सब के लिये बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। ..... और जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है। देखो वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्॥ - अथर्व. ११/५/१८

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल, प्रिय, सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे कन्या=कुमारी, ब्रह्मचर्य्येण=ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादिशास्त्रों को पढ़, पूर्णविद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश, प्रिय, विद्वान् युवानम्=पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को, विन्दते=प्राप्त होवे। इसलिये स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिये।

(प्रश्न) क्या स्त्रीलोग भी वेदों को पढ़ें? (उत्तर) अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में -

इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्॥

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मंत्र को पढ़े। जो वेदादिशास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वरसहित मंत्रों का उच्चारण और संस्कृतभाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदुषी हुई थीं, यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो नित्यप्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहै। फिर सुख कहाँ! इसलिये जो स्त्री न पढ़ें तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्योंकर हो सकें तथा राजकार्य न्यायाधीशत्वादि, गृहाश्रम का कार्य्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना, घर के सब काम स्त्री के आधीन रहना, विना विद्या के इत्यादि काम अच्छे प्रकार कभी ठीक नहीं हो सकते।।

देखो, आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं, क्योंकि जो न जानती होतीं तो केकयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकती? और युद्ध कर सकती?

ऊपर के उद्धरण से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ऐसे प्रथम सुधारक हुए हैं जिन्होंने बड़ी प्रबलता के साथ नारी शिक्षा का सन्देश तर्क पूर्वक दिया। ऐसा नहीं है कि नारी समाज की उन्नति हेतु अन्य किसी ने कार्य नहीं किया परन्तु दयानन्द ने जो तर्क प्रस्तुत किये वे अद्‌भुत थे अतः उनका अभूतपूर्व प्रभाव होना था और हुआ। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने भी स्वामी जी के इस मंतव्य के महत्त्व को आत्मसात करके महिला/कन्या शिक्षण हेतु विद्यालयों का जाल बिछा दिया।

ooo

- अशोक आर्य

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

सन्त कबीर ने बचाई गौ की जान

हमारे देश के इतिहास में अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी गौ रक्षा के लिए तन-मन एवं धन से सहयोग किया। गुजरात के ऊना में हुई घटना का सामाजिक रूप से हल निकालने के स्थान पर उसका राजनीतिकरण कर दिया गया। हिन्दू समाज तो पहले ही छुआछूत के चलते दीमक लगे पेड़ के समान खोखला हो चुका है। हिन्दू समाज के अभिन्न अंग दलित समाज में कुछ तथाकथित नेता अपने वोट बैंक बनाने के पीछे दलित-मुस्लिम गठजोड़ तक बनाने से पीछे नहीं हट रहे। जबकि देश का इतिहास उठा कर देखिये। मुस्लिम आक्रांताओं ने हिन्दू ब्राह्मण हो या दलित सभी पर अवर्णनीय अत्याचार किये हैं। दलित समाज सुधारकों में रविदास, कबीर, बिरसा मुण्डा से लेकर डॉ.अम्बेडकर अनेक प्रसिद्ध नाम हैं।

दलित संतों एवं समाज सुधारकों ने गोरक्षा के लिए सामाजिक सन्देश दिया। आज इसके विपरीत ऊना की घटना को लेकर अपने आपको दलित विचारक कहने वाले लोग गौ के सम्बन्ध में उलटे सीधे कुतर्क दे रहे हैं। सत्य यह है कि दलितों के नाम पर राजनीति करने वाले लोग असल में विदेशी चन्दे पर पलने वाली जमात हैं। ये लोग ईसाईयों और मुसलमानों के हाथों की कठपुतली मात्र हैं। इनका काम केवल दलितों को आक्रोशित कर उन्हें हिन्दू समाज से अलग करना है। एकता में शक्ति है। हिन्दू समाज को अपनी शक्ति को बचाना है तो जातिवाद का नाश करना होगा। दलित हो या सवर्ण सभी की दृष्टि में गौ पूज्यस्थानीय रही है। इस लेख में हम सिद्ध करेंगे कि कबीर साहिब ने गोरक्षा करने के लिए अपना विवाह तक करने से इंकार कर दिया था।

'एक दिन गोसाईं कबीर पूरब की धरती नगर बनारस में रहते थे। जब कबीर अठारह बरस के भए तो उनके माता-पिता ने विचारा कि इसका ब्याह कर दिया जाए। कबीर बहुत उदासीन हो रहा है, क्या पता ब्याहे का मन टिक जाए, कबीर को ब्याह ही दें। जहाँ पर कबीर को बुलवाया गया था, वहाँ पर कबीर का होने वाला ससुर पूछने लगा- अरे भाई समधियों! इसे हमारे यहाँ ब्याह दो। तब कबीर के माँ-बाप ने कहा कि भला होए जी! चलिए ब्राह्मण से जा कर पूछते हैं, जो साहा जुड़े वह साहा मान लेते हैं।

तब कबीर का पिता और ससुर उठ खड़े हुए और मिलकर ब्राह्मण के पास गए। पत्री पढ़ाई, साहा निर्मल निकला, ब्राह्मण से साहा जुड़ाया, साहा जोड़-बाँध कर दोनों के हाथ में थमा दिया गया। उसे लेकर कबीर का पिता और भावी ससुर अपने-अपने घर चले आए।

अनाज की सामग्री एकत्र की जाने लगी। घी-शक्कर लिया, चावल-दही लिया। और कबीर का जो काका था, कबीर के बाप का छोटा भाई, तिसको काका कहते हैं। वह कबीर जी का काका जाकर एक गाय मोल ले आया वध करने के निमित्त। तब परिवार के लोग कह उठे कि कबीर का काका एक गाय वध करने को ले आया है।

जब गोसाईं कबीर ने सुना कि काका जी गाय वध करने को ले आया है, तब कबीर बाहर आए। जब देखा कि काका जी गाय ले आया है, तब कबीर जी ने पूछा- ऐ काका जी! यह गऊ तुम काहे को लाए हो। तब कबीर के काका ने कहा- कबीर! यह गऊ वध करने को आयी गई है।

तब कबीर ने यह बानी बोली राग गूजरी में-

काका ऐसा काम न कीजै। इह गऊ ब्रहमन कउ दीजै।। रहाउ।।

तिसका परमार्थ- तब गोसाईं कबीर ने कहा- काका जी! यह गऊ वध नहीं करनी है, यह गऊ ब्राह्मण को दे दीजिए। यह गऊ वध करने योग्य नहीं, ब्राह्मण को देने योग्य है। तब गोसाईं कबीर के काका ने कहा- गाय वध किए बिना हमारा कारज नहीं सँवरता। यहाँ बहुत लोग जुड़ेंगे। जब गोवध करेंगे तब ही किसी महमान आए का आदर होगा। तुम यह गोवध मना मत करो।

तब गोसाईं कबीर ने यह बानी बोली-

रोमि रोमि उआ के देवता बसत हैं।। ब्रहम बसै रग माही।
बैतरनी मिरतक मुकति करत है। सा तुम छेदहु नाही।।

तिसका परमार्थ- तब गोसाईं कबीर ने कहा- काका जी! तुम इस गऊ के गुण सुन लो। इस गऊ के जितने रोम हैं, इसके रोम-रोम में देवता बसते हैं। और इसकी रगों में स्वयं ब्रह्म ही बसता है।

और जी! इसका एक यह बड़ा गुण है कि वैतरणी मृतक चलते-चलते ब्राह्मण को मिलती है। तब उस मृतक को वह गऊ भव जल तार देती है। ऐसी यह गऊ है जी। इस गऊ का नाम भवजल-तारिणी है जी। इस गऊ का वध करना ठीक नहीं। यह गऊ तुम ब्राह्मण के प्रति धर्मार्थ दे दो जी।

काका कहने लगा- तू यह कहता है कि यह गऊ ब्राह्मण को दे दो और हमारे बड़े बुजुर्ग इसे कोह= मारकर लोगों को खिलाते थे। हमें भी उसी राह चलना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो लोग कहेंगे कि ये गुमराह हो गए हैं, इनसे यह चीज होने को न आई। कबीर जी! गऊ वध करनी ही भली है। इसे, छोड़ देना हमें समझ नहीं आता। बलिहारी जाऊँ कबीर जी! यह गुनाह हमें बख्शो जी।

तब गोसाईं कबीर ने यह बानी बोली-

दूधु दही घृत अंब्रित देती। निरमल जा की काइआ।
गोबरि जा के धरती सूची। सा तै आणी गाइआ।।

तिसका परमार्थ- तब गोसाईं कबीर ने कहा- सुनिए काका जी! यह गाय जो है सो कैसी है, पहले इसका गुण सुन लें कि यह गाय कैसी है। यह गाय ऐसी है जी- यह दूध देती है, तिसका दही होता है जी। दूध से खीर होती है। दही से अमृत वस्तु घृत

निकलता है जी। उससे सब भोजन पवित्र होते हैं जी। देवताओं-सुरों नरों को भोग चढ़ता है। इस घृत का धूप वैकुण्ठ लोक जाता है। ठाकुर जी को दूध-दही-घृत भोग चढ़ता है जी और इस गऊ की काया जो है सो निर्मल है। जी ऐसी निर्मला यह गऊ है जिसके गोबर से धरती पवित्र होती है, उसका तुम बुरा चाहते हो! सो इस बात में तुम्हारा भला नहीं। बलिहार जाऊँ काका जी! यह गऊ तुम ब्राह्मण को दे दो जी, वध करने में भला नहीं।

तब फिर उन कबीर के बाबा=पिता और चाचा ने कहा- जिन शरीकों=रिश्तेदारों भाइयों के यहाँ हमने यह वस्तु खायी थी वह तो उनको भी खिलानी चाहिए। यदि हम उन्हें यह खिलाएँगे नहीं तो वे उठ जाएँगे। अतः पुत्र जी! गऊ अवश्य वध करनी चाहिए। ऐसे हमारी इज्जत नहीं रहती।

तब गोसाईं कबीर ने यह बानी बोली -

काहे कउ तुमि बीआहु करतु हउ। कहत कबीर बीचारी।
जिसु कारणि तुमि गऊ बिणासहु। सा हमि छोडी नारी।।

तिसका परमार्थ- तब गोसाईं कबीर ने कहा- सुनिए बाबा-काका जी! तुम जो हमारा ब्याह करते हो सो किस कारण करते हो जी। जिस कारण तुम गऊ विनाशते हो जी कि हमारा कारज सँवरे, वह तुम अपना कारज रख छोड़ो। हमने वह स्त्री ही छोड़ी तो तुम किसका ब्याह करते हो। हमने वह नारी ही छोड़ दी।

अजी! तुम जानो और तुम्हारा ब्याह। हमने तो वह नारी ही छोड़ दी जी।

इस प्रकार जब गोसाईं कबीर कुपित हो उठे, तब उन सभी का अभिमान छिटक गया। उन्होंने आपस में मसलत करी कि जिस कबीर ने यह बात कही है वह ब्याह न करेगा। आओ अब यह गऊ ब्राह्मण को दे दें और हम सीधा अनाज करें जैसा कबीर कहता है।

तब कबीर गोसाईं के पास परिवार के सब लोग मिल कर आए और बोले- भला हो कबीर जी! जैसा तेरा जी है वैसा ही करेंगे। यह गऊ ब्राह्मण को दीजिए जी। और जो प्रसाद=भोजन तुम कहते हो हम वही प्रसाद सेवन करेंगे जी। बस! तुम अब स्त्री न छोड़ो जी, अब तुम स्त्री ब्याह लो।

तब गोसाईं कबीर ने कहा- न बाबा जी! हमारे मुख से निकल चुका है, सो अब मैं स्त्री नहीं ब्याहता। तब जितना परिवार था सब कबीर जी को निवेदन करने लगे कि ना जी! अब हमने गऊ छोड़ दी तो तुम स्त्री न छोड़ो जी।

तब गोसाईं कबीर ने कहा- मैं स्त्री तभी न छोड़ूँगा जी जब तुम स्त्री के माँ-बाप को भी जाकर कहो कि गोवध नहीं करना। यदि तुम्हारे कहने लगकर वे गोवध नहीं करेंगे तो मैं उस स्त्री से ब्याह कर लूँगा। यदि वे गोवध करेंगे तो मैं वहाँ न जाऊँगा, न ही मैं वह स्त्री ब्याह कर लाऊँगा।

तब उन्होंने कहा- भला हो जी! वे लोग चलते-चलते उनके पास पहुँचे और बोले- भाई रे! हमने जो गऊ वध के लिए लायी थी वह कबीर ने ब्राह्मण को दिलवा दी। उन्होंने सारी बात कह सुनाई कि यह बात ऐसे-ऐसे घटी है। अब कबीर कहता है कि हमारे सास-ससुर को कहो कि हम तब ही तुम्हारे घर आवेंगे जब तुम गोवध न करोगे।

तब उन लोगों ने कहा- भाड़ में जाए वह बात जो कबीर जी को न भावे। हम तो तुम्हारे लिए ही गोवध करने वाले थे। क्यों जी! जब तुम्हीं खुश हो तो हम गोवध नहीं करेंगे।

तब कबीर के परिवारी लोग बोले- हमें इस बात में खरी खुशी होगी, यदि तुम लोग गोवध न करो।

तब सब मिल कर कबीर जी के पास लौट आए। माता-पिता और सास-ससुर सबने आकर नमस्कार किया और कहा- कबीर जी! जो तुमने कहा वह हम सबने मान लिया। हमने गाय छोड़ दी जी। पर अब तुम जो आज्ञा करोगे हम वैसा ही प्रसाद बनाएँगे बारात के आवभगत के लिए।

तब गोसाईं कबीर ने कहा- अब तुम यही प्रसाद करो- यही शक्कर-भात-घी-दही मिश्रित प्रसाद करो। तुम्हारा भला होगा।

तब उन लोगों ने गोसाईं कबीर से कहा- भला जी! हम यही प्रसाद बनाएँगे जी। पर जी! अब तुम्हें खुशी है न हमारे ऊपर।

तब गोसाईं कबीर ने कहा - तुम्हारे ऊपर ठाकुर जी की खुशी है, तुम्हारा भला होगा। तब वे सास, ससुर अपने घर चले गए। इधर बाबा, काका परिवार के सब लोग खुश हुए। इस प्रकार गोसाईं कबीर ब्याहे गए और राम-नाम स्मरण करने लगे।

(जनमसाखी भगत कबीर जी की)
मूल पंजाबी रचयिता - सोढी मनोहरदास मेहरबान
रचनाकाल- १६६७ विक्रमी, साखी नं ४ का अनुवाद
हिन्दी अनुवादक- राजेन्द्र सिंह
प्रस्तुति- डॉ. विवेक आर्य

पुण्य तिथि पर विशेष

महात्मा हंसराज, त्याग, सादगी, सेवाभाव व कर्तव्य परायणता की प्रतिमूर्ति थे।

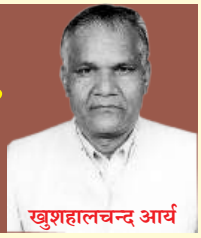

खुशहालचन्द आर्य

महात्मा हंसराज १९ अप्रैल १८६४ में ग्राम बजवाड़ा जिला होशियारपुर में पिता चुन्नीलाल व माता हरदेवी जी के घर एक निर्धन परिवार में पैदा हुए। हंसराज के पिता लाला चुन्नीलाल जी ईश्वर के भक्त थे। उनका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ा। लाला चुन्नीलाल के दो पुत्र थे। मुल्कराज और हंसराज। मुल्कराज बड़े थे। इन दोनों में परस्पर बड़ा प्यार था। हंसराज बचपन से ही बड़े मेधावी बालक थे और खेलने में भी बड़ी रुचि रखते थे। वे पढ़ने में तथा खेलने में सदा ही सरदार रहे और आगे चलकर भी उन्होंने अपने मित्रों के साथ मिलकर कई संस्थाएँ खोलीं उनमें भी उन्हें अध्यक्ष पद ही मिलता रहा। बचपन से ही वे फैसला करने में बड़े दक्ष थे। एक बार दो दलों में अनबन हो गई जिसमें एक दल के नेता हंसराज थे। जब उन दोनों दलों में लड़ाई झगड़ा होने ही वाला था तब हंसराज बोले कि हम लड़ाई न करके शेर सुनायेंगे और जो अधिक और अच्छा शेर सुनायेगा उसी की विजय मानेंगे। माहौल लड़ने के स्थान पर शेर सुनाने में बदल गया और शांति स्थापित हो गई। आगे चलकर भी हंसराज जी ऐसा ही सुझाव देते थे जो सबको मान्य हो जाता था। यह उनकी बुद्धि की प्रखरता थी।

महात्मा हंसराज ने अपने जीवन में दो मुख्य कार्य किए जिनमें पहला काम डी.ए.वी संस्था की स्थापना तथा दूसरा काम देश में आये भूकम्प, अतिवृष्टि तथा सूखा आदि में अपने सहयोगियों के साथ सेवा कार्य करना। इनका संक्षिप्त वर्णन यहाँ दे रहे हैं।

हंसराज ने अपने गाँव की प्राइमरी शिक्षा पास करके अपने बड़े भाई मुल्कराज के साथ लाहौर में रहते हुए क्रिश्चियन स्कूल में प्रवेश ले लिया। इसी समय महर्षि दयानन्द पंजाब का दौरा करते हुए १९ अप्रैल १९७७ को लाहौर पहुँचे। स्वामी जी के आगमन से लाहौर में धूम मच गई और स्वामी जी के जगह-जगह प्रवचन होने लगे। हंसराज जी ने भी उनके कई प्रवचन सुने। स्वामी जी के प्रवचनों का प्रभाव हंसराज जी के ऊपर बहुत अधिक पड़ा। एक और भी प्रभाव पड़ा, वह था अन्याय को देखकर अपनी बात को निर्भीकता से प्रस्तुत करने का। हंसराज जी जिस क्रिश्चियन स्कूल की नौवीं कक्षा में पढ़ते थे, उस स्कूल का हैडमास्टर जो लालच देकर हिन्दू से ईसाई बनाता था वह हिन्दू धर्म की बड़ी निन्दा करता था। एक दिन हंसराज ने अपने तर्कों से हिन्दू धर्म को अच्छा सिद्ध कर दिया और ईसाई धर्म में कई दोष निकाल दिये। यह सुनकर हैडमास्टर आग बबूला हो गया और पहले तो हंसराज को खूब पीटा और फिर स्कूल से निकाल दिया। परन्तु हंसराज पढ़ाई में इतने तेज थे कि हमेशा कक्षा में फर्स्ट आते थे जिससे हैडमास्टर को हंसराज को पुनः स्कूल में भर्ती करना पड़ा। हंसराज जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एंट्रेन्स की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर पंजाब कॉलेज में प्रवेश लिया जिसमें उसी वर्ष लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, राजा नरेन्द्र नाथ व रूलिराम साहनी आदि जो पंजाब के उल्लेखनीय व्यक्ति थे, ने भी प्रवेश लिया था। इसलिए इनसे हंसराज जी की घनिष्टता हो गई। लाला लाजपत राय व गुरुदत्त विद्यार्थी आर्य समाजी थे इसलिए हंसराज ने भी आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर ली और आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे, जिससे पंजाब भर में आर्य समाज की धूम मच गई।

सन् १८८३ में जब महर्षि दयानन्द का अजमेर में देहावसान हो गया, तब लाहौर आर्य समाज अनारकली ने लाला जीवनदास व पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी को अजमेर भेजा। दीपावली की संध्या को जब महर्षि दयानन्द की इहलीला पूर्ण हो रही थी उस समय गुरुदत्त विद्यार्थी स्वयं वहाँ पर विद्यमान थे। उन्होंने स्वामी जी के महाप्रयाण का दृश्य अपनी आँखों से देखा था। आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होने पर भी गुरुदत्त की तब तक ईश्वर के प्रति

आस्था पूर्णतया जम नहीं पाई थी। कदाचित उनका विज्ञान का विद्यार्थी होना भी इसमें आड़े आ रहा था। तथापि महर्षि दयानन्द की मृत्यु की घटना को प्रत्यक्ष देखकर गुरुदत्त का ईश्वर के अस्तित्व और उसकी लीला के प्रति गहन विश्वास जम गया। जब गुरुदत्त और जीवनदास लाहौर वापस आये और उन्होंने सारी घटना सुनाई तो उसका बड़ा गहन प्रभाव आर्य समाज के सदस्यों पर पड़ा। स्वामी जी के विचारों के अनुकूल दयानन्द कॉलेज के रूप में सर्वोत्तम स्मारक बनाने पर विचार हुआ।

लाला लाजपत राय व गुरुदत्त विद्यार्थी अन्य लाहौरवासियों के साथ मिलकर महर्षि दयानन्द का स्मारक बनाने पर विचार कर रहे थे। उनके सामने धन, जगह की समस्या इतनी बड़ी नहीं थी जितनी बड़ी दयानन्द स्कूल का मुख्याध्यापक बनाने की थी। इधर महात्मा हंसराज भी यह दृढ़ निश्चय कर चुके थे कि मैं भी महर्षि दयानन्द की भाँति देश व समाज का काम निःस्वार्थ व त्याग भाव से करूँगा और महर्षि की स्मृति में जो दयानन्द स्कूल स्थापित होगा उसकी मैं बिना वेतन लिए सेवा करूँगा। और उन्होंने अपनी इच्छा लाहौरवासियों के सामने प्रकट कर दी। सुनकर सभी लोग बड़े प्रसन्न हुए और इस प्रकार उनकी समस्या का समाधान हो गया। हंसराज ने सबके सामने अपनी इच्छा तो प्रकट कर दी परन्तु उनकी पढ़ाई का तथा घर का खर्च उनके बड़े भाई मुल्कराज चलाते थे। अब हंसराज ने बी.ए. पास कर लिया था। मुल्कराज को उम्मीद थी कि हंसराज कुछ कमाने लग जायेगा तो मेरा खर्च कम हो जायेगा। हंसराज को यही चिन्ता सता रही थी कि जब मैं अपने बड़े भाई को यह बताऊँगा कि मैंने दयानन्द हाईस्कूल की बिना वेतन लिए सेवा देने की बात कह दी है तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी? पर जब हिम्मत करके हंसराज ने यह बात कही तब भाई ने कहा कि कोई चिन्ता की बात नहीं। मुझे डाकखाने की नौकरी से अस्सी रुपये मिलते हैं, मैं चालीस रुपयों में अपना खर्च चलाऊँगा और चालीस रुपये से तेरा परिवार चलाऊँगा। तुम निश्चिंत होकर दयानन्द का काम बिना वेतन लिए करो। यह सुनकर हंसराज का मन प्रसन्न हो गया उनका स्वप्न पूरा हो गया था। मुल्कराज का यह त्यागमय आदर्श हम आर्यों को स्मरण करना चाहिए।

फरवरी १८८६ के अन्त में आर्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर इस पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया। २८ फरवरी १८८६ रविवार के दिन आयोजित इस सम्मेलन में अनेक प्रमुख विद्वानों और सामाजिक नेताओं ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए जिनमें लाला लाजपतराय व पंडित

गुरुदत्त मुख्य थे। सभी ने महर्षि की स्मृति में दयानन्द एंग्लो वैदिक (डीएवी) स्कूल जिसमें वेदों की शिक्षा व संस्कृति के साथ-साथ अंग्रेजी, विज्ञान व गणित भी पढ़ाया जावे, स्थापित करने के निश्चय को भी दोहराया। जिसको सुनकर लोगों ने उनको कन्धे पर उठा लिया और उनके ऊपर फूलों की वर्षा होने लगी। महात्मा हंसराज पहले दयानन्द स्कूल के हेडमास्टर बने फिर दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज के प्रिन्सिपल बने। उन्होंने इतनी लगन, ईमानदारी, परिश्रम, त्याग, सेवा व कर्तव्य भाव से कार्य किया कि यह प्रकल्प एक छोटे से पौधे से आज एक विशाल वट वृक्ष का रूप धारण किए हुए है जिसकी सात सौ शाखाएँ विश्वभर में फैली हुई हैं। इसका श्रेय महात्मा हंसराज को ही जाता है।

इस संस्था को सुचारु रूप से चलाने के बाद महात्मा हंसराज ने सेवा कार्य की तरफ ध्यान दिया और उस क्षेत्र में भी बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। सन् १८९५ से १८९७ तक जब बीकानेर तथा मध्यप्रदेश में बहुत जोरों का सूखा पड़ा उसमें महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय ने दयानन्द कॉलेज के छात्रों के साथ बहुत सेवा कार्य किया। जिससे भारत में आर्य समाज की बड़ी ख्याति बढ़ी। महात्मा जी को अकाल के समय दो काम करने पड़ते थे। प्रथम अकाल पीड़ितों की

सेवा करना, दूसरा ईसाई मिशनरी जो ग्रामीण लोगों की लाचारी का लाभ उठा, उनको लोभ लालच व भय से ईसाई बनाते थे उनको रोकना। यह भी हिन्दू जाति की सेवा करना ही थी। इसके बाद सन् १९०५ में कांगड़ा में भयंकर भूकम्प आया तथा १९०५ में ही कुल्लू में भयंकर ज्वालामुखी फटा, इनमें भी महात्मा हंसराज ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इन सेवा कार्यों से महात्मा हंसराज का नाम विख्यात् हो गया साथ ही आर्य समाज के प्रति देशवासियों की बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई। हंसराज जी १९१२ में डीएवी के प्राचार्य पद

को छोड़कर केवल सेवा कार्यों में जुट गए। सन् १६१८ में गढ़वाल में १६१६ में छत्तीसगढ़ में तथा १६२० में उड़ीसा के पुरी क्षेत्र में हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया, उस समय महात्मा हंसराज और महात्मा आनन्द स्वामी ने वहाँ जाकर हिन्दुओं को शुद्ध करके पुनः हिन्दू बनाकर हिन्दू जाति की बड़ी सेवा की। सन् १६३४ में बिहार में, १६३५ में बलोचिस्तान के डी.ए.वी. के पद से मुक्त होने के तीन साल बाद उनकी आज्ञाकारी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया। उनके बड़े पुत्र बलराज को लाहौर षड्यंत्र काण्ड में बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार घरेलू तकलीफें तथा अधिक परिश्रम और कम आराम करने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और १५ नवम्बर १६३८ की रात के ग्यारह बजे वे इस शरीर को छोड़कर अमरत्व की राह पर चल पड़े।

महात्मा हंसराज ने २५ वर्ष तक डी.ए.वी. संस्था की बिना वेतन लिए केवल सेवा ही नहीं की बल्कि संस्था का एक पैसा भी अपने स्वार्थ के लिए नहीं लिया। जिस प्रकार महात्मा चाणक्य के जीवन में आता है कि जब उनको राष्ट्र के लिए कुछ पत्र व्यवहार करना पड़ा था तब वे तेल की डिब्बी और माचिस का प्रयोग राज्यकोष के पैसों से करते थे और जब उनको अपने व्यक्तिगत पत्र व्यवहार के लिए तेल की आवश्यकता होती थी तो तेल और माचिस का प्रयोग अपनी नौकरी के पैसों से करते थे। यानि राज्यकोष का एक पैसा भी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं प्रयोग करते थे। उसी प्रकार महात्मा हंसराज भी जब डी.ए.वी. का कोई काम करते थे तो पैन और कागज के पैसे कॉलेज के कोष से लेते थे और जब उन्हें अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए कुछ लिखना पड़ता था तो पैन और कागज के पैसे अपने पास से लगते थे। यह बात मुझे महात्मा चाणक्य और महात्मा हंसराज की बहुत पसन्द आई। मैं भी उनके आदर्शों पर चलते हुए अपने जीवन में उन आदर्शों को प्रयोग करने का प्रयत्न करता रहता हूँ। यदि सभी भारतीय इन बातों का ध्यान रखें और ये सोचें कि मैं जिस संस्था से जुड़ा हुआ हूँ या जिस पद पर कार्य कर रहा हूँ उससे मैं अपने स्वार्थ के लिए लाभ बिल्कुल न उठाऊँ, तब देश में भ्रष्टाचार भी नहीं फैलेगा और देश उन्नत व समृद्धशाली बनता जायेगा। मेरे भारत देश में इस बात की कमी है इसलिए देश उन्नति नहीं कर रहा है। अतः भारत की उन्नति के लिए इस बात का सब को ध्यान रखना चाहिए।

– गोविन्द राम एण्ड सन्स
१८० एमजी रोड, दोतल्ला, कोलकाता

दोहरी खेती दोहरी सफाई

आम्राश्च सिक्ता: पितरश्च तृप्ता:।
एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा।।

कर्म के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक भाषा में एक विशेष संकेत यह भी है कि 'दोहरी खेती' या 'दोहरी सफाई' करनी चाहिए। खेती करते समय कृषक को यह समझना चाहिए कि एक तो मैं बाहर भूमि को जोत रहा हूँ। समय-समय पर खाद पानी देता हूँ। फसल जब कुछ बढ़ने लगती है तो घास-पात से उसे बचाता हूँ। निराई-गुड़ाई करता हूँ। इस प्रकार निरन्तर फसल की रक्षा करता हुआ अन्त में अन्न-धान्य रूप में फल प्राप्त करता हूँ। इसके साथ मेरे अन्दर भी एक कृषि-कार्य चल रहा है। जैसा कि बुद्ध ने भी कहा है- 'हे भारद्वाज! यह जो आत्मा की खेती है, इसका बीज श्रद्धा है, वृष्टि तप है और फल प्रज्ञा है। शरीर का संयम, वाणी का संयम और आहार का संयम, ये क्षेत्र की मर्यादायें (बाड़) हैं। मनुष्य का पुरुषार्थ बैल है और उसका मन जोत है।

जो इस प्रकार की खेती करता है, यह अमृत की फसल उत्पन्न करता है और दु:खों से छूट जाता है।'

महाराज का कहना है- जब भी इस अन्तःकरण रूपी भूमि में घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेषादि स्वाग्रही (Self-asserting) भाव रूपी खरपतवार सिर उठाने लगें तो पुरुषार्थ रूपी कस्सी से तुरन्त उसे उखाड़ देना चाहिए। भक्ति रूपी जल से इसे सींचते रहना चाहिए तथा प्रेम रूपी खाद से इसकी शक्ति को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए। इस प्रकार प्रयत्न विशेष से सम्पादित अन्तःकरण रूपी उर्वर भूमि में जो भी सेवा रूपी कर्म के उत्तम-उत्तम बीज बोये जायेंगे, वे इस आन्तरिक कृषि करने वाले साधक को अनन्त समृद्धि से युक्त कर देंगे।

इसी प्रकार महाराज कहते हैं- जब तुम झाड़ू लगा रहे हो, उस समय अपने मन में ऐसे भाव जागृत करो कि इस सेवा रूपी झाड़ू के द्वारा मेरे अन्तःकरण में काम, क्रोध, लोभ, मोह, डाह, ईर्ष्या, निन्दा, तृष्णा इत्यादि के रूप में पड़ा हुआ गन्दगी का ढ़ेर भी साफ हो रहा है। बाह्य शुद्धि के साथ मेरा मन भी स्वच्छ होता जा रहा है।

जब तुम गायें चरा रहे हो, उस समय सोचो कि कैसे ये गायें दिन-भर जंगल में चरती हुई दूध से भर जाती हैं और सायंकाल अपने स्वामी को तृप्त कर देती हैं। पर ये गायें उसी अवस्था में अच्छा दूध बनाकर लाती हैं जब इनका ग्वाला सावधान हो और सचेतन होकर इस बात की निगरानी रख रहा हो कि कहीं गायें मल विष्ठा आदि अभक्ष्य पदार्थ तो नहीं खा रहीं, ध्यानपूर्वक उनको ऐसे स्थान से बचाता रहे। अच्छी आरोग्य दायक पुष्टिकारक हरी-हरी घास वाले स्थान में ही इन्हें ले जाता रहे। जो ग्वाला प्रमाद कर जाता है, सदा गायों के साथ पीछे-पीछे नहीं रहता, उसकी गायें स्वच्छन्द होकर एक तो मल-विष्ठा खाने लग जाती हैं, (यह पूर्णतः सत्य बात है)। दूसरा, पर-क्षेत्र में प्रवेश कर अनधिकृत शस्य खाने लगती हैं। अकस्मात् उसी समय वहाँ क्षेत्र स्वामी आ पहुँचता है तो इनकी पिटाई करने लगता है तथा गोस्वामी के पास आकर उपालम्भ भी देता है। इस प्रकार ग्वाले के प्रमाद करने से अनेकानेक अनर्थ उपस्थित हो जाते हैं।

इस सम्पूर्ण रूपक को अपने अन्दर भी घटाना चाहिए- हमारे शरीर में इन्द्रियाँ ही गायें हैं। मन ग्वाला है। बुद्धि उस ग्वाले को अपार सहयोग देने वाली ज्ञान व बल का समुच्चय स्वरूप उसकी देवी है। आत्मा स्वामी है। इन्द्रियरूपी गायों के द्वारा विषयरूपी चारा (घास) चरने के लिए संसाररूपी जंगल

में प्रातः ही प्रस्थान कर दिया जाता है। बुद्धि रूपी देवी का यदि अपने पतिदेव मन के साथ पूर्ण सामञ्जस्य व पूर्ण प्रेम है तो मन अपनी देवी का ध्यान रखता हुआ सावधान हो अपने कर्त्तव्य-पालन में तत्पर रहता है। एक क्षण के लिए भी वह गाफिल नहीं होता कि इन्द्रियरूपी गायें किसी खेत में घुसकर उत्पात मचाने लगें या कहीं इधर-उधर विष्ठा खाने लगें, जिसके परिणामस्वरूप अपनी देवी जी को शर्मिन्दा होना पड़े। इस प्रकार बुद्धि व मन दोनों के सहयोग से इन्द्रियरूपी गायें, आत्मारूपी अपने स्वामी (मालिक) को उत्तम से उत्तम ज्ञान रूपी दूध पिलाती हैं तो आत्मा तृप्त हो जाता है।

महाराज कहते हैं- यदि तुम कोई भवन बना रहे हो तो विचार करो- जैसे एक के ऊपर एक ईंट रखते हुए बड़े परिश्रम से यह भवन बनकर तैयार होता है जिसके बन जाने पर हम आनन्दपूर्वक इसमें निवास करते हैं, उसी प्रकार इस जीवन रूपी भवन के निर्माण के लिए भी सतत् जागरुक रहते हुए पसीना बहाना पड़ेगा। एक-एक सद्विचार रूपी ईंट और सद्भावना रूपी सीमेण्ट से शनैः-शनैः कुशल शिल्पी की तरह धैर्य पूर्वक लगे रहकर इसके भव्य रूप को प्रकट करना होगा। तत्पश्चात् इसके ऊपर प्रेम व करुणा की मीनाकारी से इसके सौन्दर्य को निखारना होगा। इस प्रकार महाराज प्रत्येक बाह्य क्रिया व बाह्य निर्माण के साथ अन्तःक्रिया व अन्तःनिर्माण का उपदेश देते हैं। यही है महाराज की दोहरी खेती व दोहरी सफाई का भाव।

- पूज्य स्वामी सोमानन्द जी के प्रवचन
प्रतुति- आचार्य प्रद्युम्न

Salient feature of Manusmriti

Dr. Ramesh Gupta

Contd.... from previous Issue

Present Manusmṛti has 12 chapters with a total of 2,685 ślokas.

The first chapter deals with the creation and religion (dharma).

2nd deals with sacraments and celibacy.

3rd with marriage and family life as well as the responsibilities of married couple and includes the 5 Yajña.

4th chapter deals with human code of conduct.

5th chapter is about what should be eaten and what shouldn't be, as well as what is clean and what is not.

6th chapter deals with Vānprastha and Sanyāsa, and the duties of a person in these stages of life.

Chapters seven to nine deal with governance and law.

Chapter 10 addresses Varऐa Vyavasthā, or the 4 groups of society.

Chapter 11 discusses penance.

Chapter 12 details the fruits of action, including the attainment of salvation.

Overall, the code of conduct, or Dharma proposed in Manusmऐti are eternal as far as the place, person, or period. These can be divided into Dharma, or the conduct of a person, family, society, and nation, including government and humanity. The makeup of different segments of society and the ability to change from one to another Varऐa, were clearly based on a person's desire and ability rather than by birth. This is no different from the social structure prevalent at present, such as have teachers, soldiers, businessmen, and workers who, based on their abilities, can always move from one position to another. The only difference in what is prevalent today and what was championed by Manu is that at present, the four groups are limited to their professional trade. Manu, however, had proposed the system to address the life of a person as a whole. It has also laid down clearly that women be respected, and th ose who are less fortunate, or less educated, be given utmost respect in society a concept which is contrary to the common belief about Manusmṛti today.

To be continued .....

M.D., F.A.C.P., F.A.C.G.
Email: rameshamita@gmail.com

दूषित और विकृत इतिहास

भारत के इतिहास को दूषित और विकृत कर उसमें मनघडंत झूंठे किस्से, कहानियाँ जोड़कर जहाँ वामपंथी व कथित सेक्यूलर लेखक प्रमाणित इतिहास लेखन में बाधक तत्व साबित हुए, उससे ज्यादा इतिहास को तोड़ मरोड़कर ऐतिहासिक पात्रों पर फिल्में, सीरियल आदि बनाकर इतिहास को दूषित व विकृत करने में टीवी चैनल्स का सबसे बड़ा हाथ रहा। जोधा अकबर, महाराणा प्रताप, मीराबाई आदि सीरियल्स इस बात के प्रमाण हैं। मनोरंजन के नाम पर बनी फिल्म 'मुगले आज़म' के बाद देश का कोई नागरिक यह मानने को तैयार ही नहीं होता कि जोधा नाम की अकबर की कोई पत्नी नहीं थी। अकबरनामा, जहाँगीर नामा और अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल द्वारा कहीं भी अकबर की किसी पत्नी का नाम जोधा नहीं लिखा गया, लेकिन मुगले आज़म व बाद में जोधा-अकबर फिल्म व जोधा-अकबर सीरियल देखने वालों के ज़ेहन में यह बात नहीं बैठती और वे मनोरंजन के नाम पर बने इन सीरियल्स व फिल्मों का हवाला देते रहेंगे। यही नहीं मुगले आज़म के बाद कई कथित इतिहासकारों ने इस झूंठ को अपनी पुस्तकों में शामिल कर इतिहास की प्रमाणिकता प्रदूषित की।

महाराणा प्रताप सीरियल में भी स्टोरी को दिलचस्प और मनोरंजन से भरपूर बनाने के लिए ऐतिहासिक तथ्यों की पूरी तरह अनदेखी की गई। हाल में ही मैं मीराबाई पर एक सीरियल देख रहा था। सीरियल में वृन्दावन यात्रा पर जा रही मीराबाई के साथ मेड़ता के शासक वीरमदेव को जोधपुर के शासक मालदेव के भय से छिपते हुए दिखाया गया। यही नही सीरियल में मालदेव व वीरमदेव की लड़ाई भी दिखाई गई और घायल वीरमदेव द्वारा अपनी मृत्यु से पहले मालदेव को मारना दिखाया गया। जबकि हकीकत में मालदेव का निधन वीरमदेव की मृत्यु के कई वर्षों बाद हुआ। वीरमदेव के निधन के बाद उनका पुत्र जयमल मेड़ता की गद्दी पर बैठा था और मालदेव से उसने कई युद्ध भी किये। यदि मालदेव व वीरमदेव आपसी झगड़े में एक ही दिन एक दूसरे के हाथों मारे गये होते तो फिर मालदेव की जयमल के साथ कई लड़ाईयाँ कैसे होतीं? लेकिन सीरियल बनाने वालों को सही ऐतिहासिक तथ्यों से कोई लेना देना नहीं।

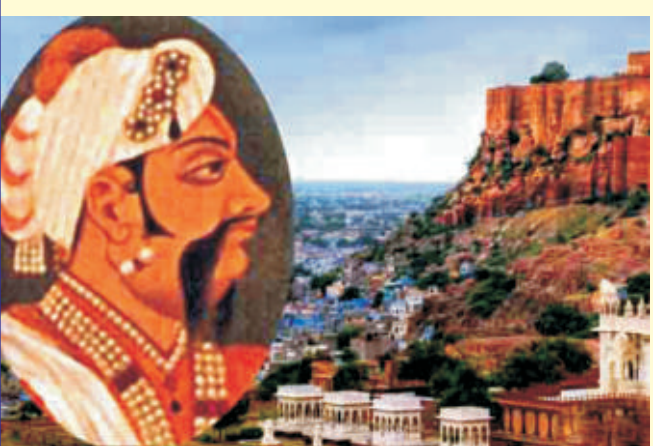

कानूनी बचाव के लिए महज एक डिस्क्लेमर लगा कर ऐतिहासिक पात्रों के नाम व घटनाओं पर मनोरंजन और टीआरपी की अंधी दौड़ में फिल्में व सीरियल्स बनाने के कृत्य को कतई उचित नहीं ठहराया जा सकता। जिस तरह साहित्यिक कहानियाँ, कविताएँ जनमानस के मन पर प्रभाव डालती हैं, उससे ज्यादा वर्तमान में टीवी सीरियल्स व फिल्में प्रभाव छोड़ती हैं, हर व्यक्ति इतिहास नहीं पढ़ता, वह इन्हीं कहानियों को सच्चा इतिहास मान बैठता है और जब उसे कोई प्रामाणिक इतिहास सुनाता भी है तो वह उस पर भरोसा नहीं करता। जिस तरह चंदबरदाई के चारणी साहित्य पृथ्वीराज रासो ने संयोगिता नाम का चरित्र घड़कर जयचंद को गद्दारी का पर्यायवाची शब्द बना दिया, ठीक उसी प्रकार मुगले आज़म, अनारकली, जोधा अकबर आदि फिल्मों ने एक मनघडंत जोधा बाई नाम रच दिया, जो जनमानस के दिलोदिमाग से कभी नहीं निकल पायेगा।

- रतन सिंह शेखावत
साभार- ज्ञान दर्पण

विश्व के पुस्तकालय में उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। प्राचीन भारतीय ऋषियों का मन्तव्य है कि सृष्टि की आदि में परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से यह ज्ञान मनुष्यों को प्रदान किया। वेद परमपिता के निःश्वास के समान हैं। इन ऋचाओं का मुख्य विषय स्तुति है और इस स्तुति के माध्यम से ऋषि परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते हैं। मंगलेच्छुक मनुष्य परम पवित्र इन ऋचाओं का अध्ययन करता है और स्वयं परमात्मा से ऋचाओं में स्थापित रस का आनन्द लेता है।[१]

कालान्तर में जब वेदों का साक्षात् दर्शन कठिन हो गया तो अन्य ग्रन्थ लिखे गये।[२] ब्रह्मा का (वेद) व्याख्यान ही ब्राह्मण कहलाता है। इन ब्राह्मणों में वेदों के भावों को यागों में विनियोग के साथ-साथ मंत्रों की व्याख्या को रोचक बनाने के लिए नाटक का रूप दिया गया और इन नाटकों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए आख्यान के रूप में व्याख्यायें की गईं।

सरमा तथा पणि संवाद

सरमा शब्द निर्वचन प्रसंग में उद्धृत ऋग्वेद १०.१०८.१ के व्याख्यान में प्राप्त होता है। आचार्य यास्क का कथन है कि इन्द्र द्वारा प्रहित देवशुनी सरमा ने पणियों से संवाद किया।[३] पणियों ने देवों की गाय चुरा ली थी। इन्द्र ने सरमा को गवान्वेषण के लिए भेजा था। यह एक प्रसिद्ध आख्यान है।

आचार्य यास्क द्वारा 'सरमा' माध्यमिक देवताओं में पठित हैं। वे उसे शीघ्रगामिनी होने से सरमा मानते हैं। वस्तुतः मैत्रायणी संहिता के अनुसार भी सरमा वाक् ही है[४] गाय रश्मियाँ हैं[५], इस प्रकार यह आख्यान सूर्य रश्मियों के अन्वेषण का आलंकारिक वर्णन है। निरुक्तशास्त्र के अनुसार **'ऋषेः दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता'**[६] अर्थात् सब जगत् के प्रेरक परमात्मा अदृष्ट अर्थों को आख्यान के माध्यम से उपदिष्ट करते हैं। वेदार्थ परम्परा के अनुसार मंत्रों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं। आधिभौतिक, आदिदैविक, आध्यात्मिक तीनों दृष्टियों से इस सूक्त के पर्यालोचन से सिद्ध होता है कि यह सूक्त किन्हीं विशेष अर्थों को कहता है। विश्लेषण के लिए इस संवाद में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को व्याकरण और निरुक्त के अनुसार समझने की आवश्यकता है।

क्रमशः एक-एक शब्द पर विचार करते हैं।

प्रणयः – ऋग्वेद में १६ बार प्रयुक्त बहुवचनान्त प्रणयः शब्द, चार बार एक वचनान्त 'पणि' शब्द का प्रयोग है। पणि शब्द **'पणृ व्यवहारे स्तुतौ च'** धातु से अच् प्रत्यय करके पुनः मतुवर्थ में अत 'इनिठनौ' से इति प्रत्यय करके सिद्ध होता है।

यः पणते व्यवहरति स्तौति स पणिः
अथवा कर्मवाच्य में पण्यते व्यवहियते सा पणिः।

अर्थात् जिसके साथ हमारा व्यवहार होता है और जिसके बिना हमारा जीवन व्यवहार नहीं चल सकता है उसे 'पणि' कहते हैं। इस प्रकार यह पणि शब्द मेघ का वाचक है। अथवा वायु का वाचक है। इस पणि को वृत्र अथवा 'असुर' कहा गया है। आचार्य यास्क ने 'वृत्रं वृणोतेः' कहकर जो आवरण करता है, ढक लेता है उसे वृत्र कहते हैं। वही वृत्र वरण कर लेने वाला मेघ जब वारिदान करता है तब देव कहलाता है। किन्तु जब जल को सुरक्षित कर लेता है बरसने नहीं देता, तब वह असुर कहलाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि-

राति ददाति इति रः सु शोभनं।
राति ददाति इति सुरः नु सुरः असुरः।।

अर्थात् इस यौगिक अर्थ के अनुसार असुर शब्द पणि के प्रसंग में अवरोधक मेघ है।

२. इन्द्र, निरुक्तकार यास्क के अनुसार-

'इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति इति इन्द्रः', इराम जलानां आनेता इन्द्रः= सूर्य। इसी तरह आदिदैविक अर्थ में इन्द्र सूर्य का वाचक है आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र जीवात्मा और परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र= सूर्य की गावः= रश्मयः गावः इति रश्मि नामसु पठितम् (निरुक्त)। अब इस कथा का भाव

हुआ कि इन्द्र= सूर्य की गावः, रश्मियों को जल न देने वाले असुरों= मेघों ने आच्छन्न कर लिया है। इन्द्र के बार-बार सूचना देने पर भी पणियों ने इन्द्र की गायों को नहीं छोड़ा और जिससे प्रजा व्याकुल होने लगी, तब इन्द्र ने दूती भेजी। दूती को यहाँ पर देवशुनी सरमा कहा गया है। **'सरति गच्छति सर्वत्र इति शरमा, देवानां सुनी सूचिका दूत्ती वा देवसूनी'**, जो तेजी से गति करती है और देवों की दिव्यता की सूचना देती है। वह विद्युत ही यहाँ देवशुनी सरमा कही गई है। इस प्रकार देवशुनी बादल की गडगड़ाहट रूपी ध्वनि के साथ पणियों से संवाद करती है और कहती है कि हमारे राजा की गौओं को छोड़ दो नहीं तो हमारा बलवान राजा दण्ड देगा। पणियों ने देवशुनी की बात नहीं मानी, तब इन्द्र ने वज्र प्रहार कर अर्थात् वायु के प्रहार के माध्यम से पणियों को मारकर धरती पर सुला दिया और अपनी गायों को मुक्त करा लिया। सारा संसार वृष्टि से सुखी हुआ और सूर्य की किरणें चारों और फैल गईं।

वैदिक आख्यानों को सामान्य अर्थों में ग्रहण न करके विशिष्ट एवं यौगिक अर्थों में ही ग्रहण करना चाहिए। शब्दों के यौगिक अर्थों के आलोक में इन आख्यानों को देखने पर वेदार्थ की उत्तम आदर्श नव्य और दिव्य प्रक्रिया का ज्ञान होता है।

अन्त में प्रश्न आता है कि वैदिक आख्यानों की वास्तविकता स्वीकरणीय है अथवा अस्वीकरणीय? तो इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि यदि रूपकालंकार की दृष्टि से वे आख्यान मन्त्रार्थ से संगत होते हैं तो वे आलंकारिक रूप से अथवा शाश्वत घटित होने वाली घटनाओं के ऐतिहासिक शैली के चित्रण के रूप में ग्राह्य एवं स्वीकरणीय हैं परन्तु यदि मंत्र सूक्तगत संवादादि का सम्बन्ध यदि किसी अवरकालिक पुराण महाभारतादि ग्रन्थों में वर्णित अनित्य इतिहास से बलात् जोड़ा गया है और वह गठजोड़ असंगत और अटपटा लग रहा है तो उसे वास्तविक रूप में स्वीकार न करेक सर्वथा अवास्तविक ही मानना चाहिए।

तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनों नैरुक्तसमयश्च,[७] तथा नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्[८] समुदाय के धातुज्ञ वैयाकरणों में विशेषः शाकटायनाचार्य तथा सम्पूर्ण नैरुक्त समुदाय वेद के शब्दों को धातुज अर्थात् यौगिक मानते हैं। इस दृष्टि से वेद मंत्रों से कोई रुढ़ि अर्थ या मानवीय अनित्य इतिहास के वर्णन की सम्भावना वहाँ नहीं हो सकती है। अतः सारमेयाश्वानी, यम-यमी, अश्विनी, देवापि, सरमा, पणि विश्वामित्र, ग्रत्समद इन्द्र आदि पदों से किसी लौकिक कथानक की कल्पना वेदों से करना अन्धाधुन्ध है। अतः ऐसे शब्दों और उनसे अभिव्यक्त होने वाले कथोपकथन से किसी अन्य प्राकृतिक व वैज्ञानिक तथ्य का अनुसन्धान करना ही युक्ति संगत होगा। यदि कोई आख्यान मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने के लिए कल्पित किए गए हैं तो उनको आलंकारिक दृष्टि से संगत मानना चाहिए। मंत्रों में उपमा, रूपक, श्लेषादि अलंकारों का प्रयोग प्राचीन और अर्वाचीन प्रायः सभी भाष्यकारों ने स्वीकार किया। वैदिक आख्यानों में प्राकृतिकता, अलौकिकता आदि का वर्णन मिलता है। उर्वशी आख्यान में मेघों का और विद्युत का, सरमा, पणि आख्यान में विद्युत् और अवर्षणशील मेघों का, इन्द्र वृत्र आख्यान में विद्युत् और मेघ के युद्ध का वर्णन है। वैदिक ग्रन्थों में इनका प्राकृतिक अर्थ किया है।

उपरिगत विवेचन से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि मन्त्रगत इतिहास अथवा आख्यान तत्वतः औपचारिक, अर्थवादात्मक उपमार्थक अथवा आलंकारिक हैं, आधुनिक अर्थ में ऐतिहासिक नहीं। अतः उनके सम्यक् अवगम एवं विश्लेषण में अतीव सावधानी तथा चिन्तन की अपेक्षा है।

पाद टिप्पणी

१. यः पावमानीरध्येतृषिभिः सम्भूत रसम्- ऋग्वेद ९.६७.५१ २. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः तेऽवरेभ्योऽसाक्षत् कृत धर्मभ्य उपदेशनं मंत्रान् सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्म ग्रहणाय ग्रन्थं सामाम्नासिषु वेदं च वेदाङ्गानि च। निरुक्त १.२० ५. निरुक्त ११.२५ देवशुनीन्द्रेण प्रहिता पणिभिरसुरैः समूढ इत्याख्यानम्। ४. वाग् वै सरमा ५. निरूक्त २.२ सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यते। ६. निरुक्त १०.४६ ७. निरूक्त १/२ ८. पातंजल महाभाष्य ५.५१

- पी.एच.डी. छात्र
दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

अपंगता ने मानी हार हौसलों के सामने

दीपा मलिक पहली ऐसी महिला खिलाड़ी बन गयीं जिन्होंने पेरालिम्पिक्स ओलम्पिक में पहला पदक प्राप्त कर इतिहास का सृजन कर दिया। दीपा ने शाट पट में रजत पदक जीता। यह शान की बात है और यह रजत पदक विजेता अनेकों की प्रेरणा स्रोत बन सकतीं हैं। अगर दीपा की जिन्दगी पर नजर डाली जाय तो उनकी हैरान कर देनेवाली जीवटता उन सभी के मन में जीवन के प्रति एक नूतन सकारात्मक भाव का संचार कर सकती है जो किसी हादसे के कारण एक ऐसे मोड़ पर पहुँच चुके हैं जहाँ से वापस लौट आना उन्हें संभव नहीं लगता और इस कारण सर्वत्र काली अंधियारी उन्हें दिखाई पड़ती है, विशेष रूप से ऐसे सभी लोगों के लिए दीपा की लगभग अविश्वसनीय कहानी प्रस्तुत है। दीपा का जन्म भी फौजी परिवार में हुआ था तथा विवाह भी फौजी के साथ हुआ। सुन्दर आकर्षक दीपा नागपाल ब्यूटी क्वीन भी रहीं। उनके दो बेटियाँ हैं। बाइक चलाने का शौक दीपा को प्रारम्भ से ही था। जिन्दगी खुशनुमा गुजर रही थी कि १९९९ में जैसे वज्रपात हो गया। निरन्तर पीठ में रहने वाले दर्द का निदान स्पाइन ट्यूमर के रूप में हुआ जिसका इलाज केवल और केवल सर्जरी था। दीपा के पति कर्नल विक्रम उस समय कारगिल युद्ध में दुश्मन के दाँत खट्टे कर रहे थे, इधर दीपा के सामने जो समस्या आन खडी हुयी वह भी किसी युद्ध से कम नहीं थी। दीपा अपने पति कर्नल विक्रम को युद्ध के मोर्चे से वापस बुलाना नहीं चाहती थीं यहाँ तक कि अपने पिता को भी सूचित किये विना सर्जरी करवाना चाहतीं थीं परन्तु डाक्टरों ने पति अथवा पिता में से एक का होना आवश्यक माना सो पिता को बुला लिया। 'तीन सर्जरी १८३ टाँके' परिणाम जीवन तो बचा परन्तु धड़ से नीचे का पूरा हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। कोई भी जीवन रक्षा पर संतोष की सांस ले सकता है पर ऐसा जीवन दीपा को मंजूर नही था। दीपा बचपन से ही स्वभाव से ही एडवेंचर प्रिय थीं। वे बताती हैं कि बचपन में जब बच्चे झूला झूलते थे वे झूले के रस्से को पकड़ ऊपर चढ़ जाती थी। ऐसी शख्शियत को व्हील चेयर का बंधन क्योंकर स्वीकार हो सकता था ? पर क्या वो इसे किस्मत की मार समझ कर स्वीकार करले या इस शारीरिक अयोग्यता पर अकल्पनीय विजय प्राप्त करे। दीपा ने दूसरा रास्ता चुना। वे कहतीं हैं कि वे या तो अस्पताल में जाकर फिजियोथिरेपी से अपनी दशा सुधारने का प्रयास करतीं इसकी अपेक्षा उन्होंने अपने को आउटडोर को समर्पित कर दिया। एडवेंचर को अपनी जिन्दगी का हिस्सा बना लिया। इस परिवार ने अपने अपने युद्ध जीत लिए। कर्नल विक्रम ने कारगिल जीता तो दीपा ने अपंगता को। दीपा के लिए यह सब और भी मुश्किल था क्योंकि उनकी बड़ी बेटी देविका भी हेमिप्लेजिया से ग्रसित थी और उसके कुछ अंग कार्य नहीं करते थे।

जब बेटी को डर के कारण तैरना मंजूर नहीं था तो दीपा अपंगता के बाबजूद पानी में उतर गयीं और इस क्रम में पता ही नहीं चला कब उन्होंने दो लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स स्थापित कर दिए। पहला २००८ में यमुना नदी में धारा के विपरीत १ कि.मी. तैरने का तथा चेन्नई से दिल्ली ३२७८ कि.मी. बाइक से तय करने का।

दीपा मलिक ने अपना खेल केरियर ३६ साल की उम्र में आरम्भ किया। वे हिमालय मोटर स्पोर्ट्स एसोशियेसन तथा फेडरेशन आफ मोटर स्पोर्ट्स क्लब आफ इण्डिया की सदस्या बनीं। एक अपंग के लिए क्या यह सदस्यता आसान

थी?नहीं। इसके लिए भी दीपा ने संघर्ष किया और कुछ नियमों में भी परिवर्तन कराये। अपनी शारीरिक स्थिति के अनुसार दीपा को 'क्वाड' जैसी विशेष बाइक चाहिए थी जो अत्यंत महंगी आती है। दीपा के पास उसे खरीदने के पैसे नहीं थे परन्तु उन्होंने प्रयास नहीं छोड़े और अंततोगत्वा एक प्रायोजक प्राप्त कर लिया। बाइक में ऐसे परिवर्तन कराये जिससे वह बाइक चला सकें। आसानी से तो उनको लाइसेंस भी नहीं मिला। फिर आया थ्रिल का अवसर। १८००० किमी की उँचाई जहाँ आक्सीजन अत्यन्त विरल हो जाती है, जीरो डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे तापमान, ऐसे दुर्गम वातावरण में दीपा ने ८ दिन में १७०० कि. मी. बाइक चलायी जो उनकी जैसी अपंगता की स्थिति में लगभग असंभव लगता है परन्तु दीपा का तो जन्म ही लगता है असंभव के विरुद्ध कारनामे करने के लिए है।

दीपा का परिवार अहमद नगर में है। वहाँ भी इन्होंने 'दी' नाम से एक रेस्टोरेंट खोला है। अभ्यास के लिए दीपा को ज्यादातर अकेले गुडगाँव रहना पड़ता है। दीपा को २०१२ में तैराकी के लिए अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया है और अब रिओ में रजत पदक ने उनके जीवन से 'डिसेबिलिटी' शब्द जिसे वे पूरी तरह से निकाल देने को आतुर थीं , निकाल फैंका है।

भाला-फैंक, शाट पट, तैराकी में ५४ राष्ट्रीय पदक, १३ अंतर्राष्ट्रीय पदक तथा अब ओलिम्पिक रजत पदक दीपा के संघर्ष और अयोग्यता पर उनकी शानदार विजय की गाथा स्वयं गा रहे हैं। उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि हौंसलों के सामने कोई बाधा देर तक नहीं टिक पाती है। दीपा आजकल काउंसलर के रूप में उन नौ-जवानों में अपनी कहानी से उत्साह पैदा करने की कोशिश भी कर रहीं हैं जो दुर्भाग्य को अपने पुरुषार्थ का अंत मान चुके हैं। दीपा के व्यक्तित्व को सत्यार्थ सौरभ परिवार नमन करता है।

प्रस्तुति - अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, ग्रेटर नोएडा

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०९३१४५३५३७६
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा परिचय सम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा विगत वर्षों में चौदह सफल आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। इसी क्रम में आगे निम्नानुसार परिचय सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं।

१६वाँ सम्मेलन दिनांक ६ नवम्बर २०१६
रविवार समय-प्रातः १०.०० बजे से
कार्यक्रम स्थल-आर्य समाज, धामा वाला अस्पताल रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड)

१७वाँ सम्मेलन दिनांक १५ जनवरी २०१७
रविवार समय प्रातः १० बजे से
कार्यक्रम स्थल आर्य समाज, अशोक विहार, फेज-१, एफ-५, नई दिल्ली-५२

- विनय आर्य, महामंत्री

श्रेष्ठ मानव बनें सत्य की राह पर चलें

विज्ञान नगर स्थित 'न्यू मिडिल वर्ल्ड स्कूल' में आध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड से

पधारे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार के प्रवचन हुए।

डॉ. विद्यालंकार ने गायत्री मंत्र की व्याख्या करते हुए बच्चों को प्रेरणा दी। उन्होंने बच्चों को मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव का पाठ पढ़ाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यहाँ छात्र-छात्राओं को सुसंस्कार देकर श्रेष्ठ मानव बनाया जाता है। - जिला आ. प्रति. सभा, कोटा

ऋषिराम आर्योपदेशक गुरुकुल में कार्यशाला एवं शिविर सम्पन्न

मुस्लिम बहुल मालाबार क्षेत्र के ग्राम कारलमन्ना जिला पालाक्काड (केरल प्रदेश) में पंडित ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय नामक गुरुकुल का संचालन विगत एक वर्ष से किया जा रहा है। वर्ष में शिविर उत्सव वेदप्रचार आदि के १-२ प्रोग्राम करते हैं और क्रमशः रविवार को वेद कक्षा, संस्कृत कक्षा यज्ञ सत्संग का आयोजन भी करते हैं। तो बीच बीच में अनेक घर वापसी शुद्धि आदि के साहसिक कार्य भी होते रहे हैं। आस पास के आर्य हिन्दू श्रद्धालुओं को वैदिक धर्म व आर्यसमाज से परिचित करवाने हेतु इस बार १६ से १८ सितम्बर २०१६ तक त्रिदिवसीय सत्यप्रकाश वैदिक कार्य शाला (शिविर) का आयोजन किया गया। जिसमें आर्यसमाजिक सिद्धांतों को स्पष्ट करने के लिये होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी, डॉ. पी. के. माधवन जी (संस्कृत प्रवक्ता एवं सेवा निवृत्त, प्राचार्य), डॉ. श्रीनाथ करियाट जी (मनोवैज्ञानिक एवं षोडश संस्कार वेत्ता), डॉ. शशि कुमार जी (एम.डी. आयुर्वेद) आदि एक एक सत्र के उपदेशार्थ आमंत्रित किये गए थे जिनके प्रशिक्षण के विषय थे नैरोग्य, अंध विश्वास व कुरीति निर्मूलन, ईश्वर आदि। गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री के एम् राजन ने सभी ७० शिविरार्थियों का धन्यवाद किया।

- के. एम. राजन, गुरुकुल अधिष्ठाता एवं शिविर संयोजक, चलभाष- ०६५६२५२६०६५

शाहपुरा में वैदिक विद्वानों के प्रवचन

शाहपुरा में आर्य समाज डोहरिया (आयोजक-श्रीमान् कन्हैयालाल जी साहू) द्वारा दिनांक १८ से २० सितम्बर २०१६ तक भारतीय संस्कृति को दृष्टिगत रखते हुए अच्छे संस्कारों हेतु वैदिक विद्वानों के प्रवचन रखे गए। इसी क्रम का विस्तार करते हुए दिनांक २१ सितम्बर २०१६ से २३ सितम्बर २०१६ तक आर्य समाज शाहपुरा द्वारा विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें वैदिक विद्वान् एवं भजनोपदेशक श्रीमान् पंडित रघुनाथ देव जी एटा (उत्तरप्रदेश) ने प्रस्तुतियाँ दीं।

- कन्हैयालाल साहू

आर्य समाज अजमेर का १३५वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

युगद्रष्टा, आर्यसमाज के प्रवर्त्तक तथा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवनकाल में १३ फरवरी १८८१ ई. को स्थापित राजस्थान के पुराने और प्रतिष्ठित आर्यसमाज अजमेर का १३५ वाँ वार्षिकोत्सव तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ (पंच दिवसीय) आगामी १२ अक्टूबर से लेकर दिनांक १६ अक्टूबर २०१६ तक आर्य समाज भवन केसरगंज में धूमधाम से हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस महोत्सव में यजुर्वेद पारायण यज्ञ आर्य जगत् के महान् याज्ञिक तथा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। वार्षिकोत्सव के अवसर पर वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् तथा सुप्रसिद्ध संन्यासी एवं देश के कई गुरुकुलों के संस्थापक/संचालक कुलपति पूज्यस्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं आचार्य सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) के प्रवचन हुए तथा आर्य जगत् के जाने माने भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल (देहरादून) एवं मधुर गायक पं. योगेश दत्त (बिजनौर) के भजनोपदेशों ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

- कल्याणसिंह आर्य, मीडिया प्रभारी, आर्यसमाज, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १/१६ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- नन्द किशोर प्रसाद; सराय केला (झारखण्ड), वैद्या श्रीमती आशाभूषण (भारती); मुजफ्फरपुर (बिहार), श्री हर्ष वर्द्धन कुमार आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री तुलसी राम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), श्री इन्द्रजित देव; यमुनानगर (हरि.), वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), श्री नारायण लाल राव; उदयपुर (राज.), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल; सवाई माधोपुर (राज.), श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्री पृथ्वी वल्लभ देव सोलंकी; उज्जैन (म.प्र.), हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री संजय आर्य; सोनीपत (हरि.), श्री अमित कुमार शर्मा; झुन्झूनू (राज.), श्री किशनाराम आर्य; नागौर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री सुबोध कुमार गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखण्ड), श्री जगदीश प्रसाद 'हरित'; नीमच (म. प्र.), श्री यज्ञसेन आर्य; विजयनगर (राज.), श्री महेश सोनी; बीकानेर (राज.)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

१९वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २०१६

सुचरितों से अपने माता पिता को तृप्त कर दे वही सन्तान है - डॉ. प्रियम्वदा

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य समापन...

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि का ज्ञान

माता लीलावन्ती सभागार में माता ब्रजलता मल्टीमीडिया के कार्यक्रम देखते श्रोतागण

महर्षि दयानंद सरस्वती को मिले भारत रत्न की उपाधि : डॉ. सरस्वती

महोत्सव मुख्य, सत्यार्थ प्रकाश की बताई महत्ता, छात्राओं ने किया शौर्य प्रदर्शन

भवानीदास आर्य, न्यास मंत्री

रचनात्मक प्रस्तुति

शारदा गुप्ता-न्यासी

स्वाध्याय, सत्संग, योग मोक्ष प्राप्ति के साधन

सन्तान के सुसंस्कारित होने से परिवार, समाज व देश बचेगा: साध्वी उत्तमा यति

देश सुदृढ़ करने के लिए संतान को संस्कारित करें : साध्वी

सत्यार्थ प्रकाश विश्व बंधुत्व का प्रतीक

तीन दिवसीय सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का शुभारंभ

- आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

'बच्चों को बैंक बैलेंस नहीं, सुसंस्कारों का अधिकारी बनाएं'

- डॉ. प्रियम्वदा

विपरीत परिस्थितियों में नहीं हों विचलित

- डॉ. सोमदेव शास्त्री

बालिकाओं की प्रस्तुति

म. द. उ. मा. वि. फतहनगर की छात्राओं द्वारा शौर्य प्रदर्शन

सरोज आर्या सम्मानित

रंजना आर्या का सम्मान

स्वामी कृष्णानन्द

महापुरुषों की जीवनी से बच्चे संस्कारित होते हैं : डॉ. पी.के.दशोरा

सन्तान के सुसंस्कारित होने से परिवार समाज व देश बचेगा : साध्वी उत्तमा यति

स्वामी सुमेधानन्द, सांसद सीकर
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
डॉ. (स्वामी) ओम् आनन्द सरस्वती
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
स्वामी आर्येशानन्द
साध्वी उत्तमायति
आचार्य हरिप्रसाद
आचार्या प्रियम्वदा
श्रीमती मिथिलेश शास्त्री
डॉ. सोमदेव शास्त्री
श्री खुशहालचन्द आर्य
श्री सत्यव्रत सामवेदी
डॉ. अजित गुप्ता
श्री रासासिंह रावत
श्री गुलाबचन्द कटारिया
गृहमंत्री, राजस्थान
श्री विनीत कुमार
उपमहाप्रबन्धक, S.B.B.J.
ध्वजारोहण
स्टाल्स पर पुस्तकादि
क्रय करते आर्यजन
श्री टी. सी. डामोर
श्री अर्जुनलाल मीणा
सांसद, उदयपुर
सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २०१६
के प्रमुख वक्तागण
प्रो. (डॉ.) पी. के. दशोरा
श्री चन्द्रसिंह कोठारी
महापौर, उदयपुर
श्रीमती प्रीता भार्गव
जेल अधिक्षक
श्री मोतीलाल आर्य
श्री केशवदेव शर्मा

शर्माना कहीं रोग न बन जाए

हर कोई शरमाता है। यहाँ तक कि बेशर्म कहे जाने वाले लोग भी शरमाते हैं। रोचक बात यह है कि शरमाना मानव जाति का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। शर्म या लज्जा को स्त्री का जेवर कहा गया है। शरमाते पुरुष भी हैं। निश्चित ही यह मानव भावनाओं में एक है जो चेहरे पर प्रकट होती है। सो हर कोई शरमाता है, मगर जरूरत से ज्यादा शरमाना भाव की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक गंभीर रोग है।

एक लम्बे समय तक इसे सहज शारीरिक क्रिया माना गया तो कई महत्वपूर्ण और रोचक गुत्थियाँ खुलीं। शर्म से जुड़े तथ्यों ने ही इसे रोग की श्रेणी में ला खड़ा किया और नाम दिया गया एरोथ्रोफोबिया। स्नायुतंत्र से संबंधित शर्म मस्तिष्क के निचले भाग हाइपोथैलमस द्वारा प्रभावित होती है। जब कोई शरमाता है तो हाइपोथैलमस हरकत में आ जाता है। यही निर्देश रक्त वाहिकाओं तक जा पहुँचता है, परिणामस्वरूप रक्त वाहिकाएँ फैलने या सिकुड़ने लगती हैं। यह स्थिति चेहरे पर भाव परिवर्तन लाती है। इससे आँखों की पलकें विशेष अंदाज में उठने-गिरने लगती हैं। इसके अलावा, गालों के उभार पर एक थिरकन पैदा हो जाती है। इसी कारण चेहरे पर लालिमा आ जाती है। अंग्रेजी में इसे ब्लश करना कहा जाता है। सामान्य तौर पर यह सब क्षणिक होता है,मगर रोग की स्थिति में यह देर तक रहता है और बार-बार होता है।

रोगी इसमें आंतरिक आनंद की अनुभूति करता है, सो बार-बार शरमाना चाहता है और रोग बढ़ता जाता है। शर्म के लक्षण शरीर में चेहरे पर ही नहीं, कई अन्य रूपों में भी देखे जा सकते हैं। मसलन, शर्म की स्थिति में लड़कियाँ आँखें झुकाए पैर के अंगूठे से धरती या फिर फर्श को कुरेदने लगती हैं, बेवजह आँचल सँवारने लगती हैं, उँगली पर दुपट्टा लपेटने लगती हैं। होठों पर उँगली रखना या फिर मुँह से उँगली दबा लेना भी शर्म के लक्षण हैं। यही नहीं, शर्मसार होती लड़कियाँ अपना चेहरा भी छिपा लेती हैं। इस कृत्य से वह अपनी शर्म छुपाती नजर आती हैं, मगर हकीकत में यह शर्म को और उभारना है। चेहरे पर आई शर्म छिपाने से नहीं छिपती है बल्कि इस बात को स्पष्ट करती है कि शर्म का अतिरेक है, लाख छिपाने पर भी नहीं छिपेगा। कुछ बच्चे तो शरमाने के साथ ही भागने और छिपने लगते हैं। यह एक मस्तिष्क से जुड़ी प्रक्रिया है जो एक तरह से शरीर की गतिविधि को असामान्य बना देता है। शरमाने वाला स्वयं नहीं जान पाता है कि क्या हो गया। कहना न होगा कि वह इस दशा में अपने शरीर से अपना नियंत्रण खो बैठता है। मगर यह बार-बार होता रहे तो शरीर में ठहराव खत्म होने लगता है, अजीबो-गरीब विकृतियाँ पैदा हो जाती हैं

– दुर्गेश शर्मा
दिल्ली

महाशोक- डॉ. धर्मवीर का असामयिक निधन

श्रीमती परोकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान, प्रख्यात् वैदिक विद्वान् डॉ. धर्मवीर जी का, दिनांकः ६ अक्टूबर प्रातः ५ बजे अचानक निधन हो गया। इस दुःखद समाचार को सुनकर सम्पूर्ण आर्यजगत् हतप्रभ रह गया। अन्त्येष्टि हेतु शवयात्रा ७ अक्टूबर २०१६ प्रातः १० बजे सरस्वती भवन, ऋषि उद्यान से प्रारम्भ हुयी। जिसमें सहस्रों आर्यजनों ने सम्मिलित होकर डॉ. धर्मवीर को चिरविदाई दी। न्यास की ओर से भी सर्वश्री अशोक आर्य, भवानीदास आर्य, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, कमलाशंकर शर्मा, विजय शर्मा, सुरेशचन्द्र आर्य आदि ने भाग लिया। मलूसर स्थित शवदाहगृह (जहाँ महर्षिवर की अन्त्येष्टि हुयी थी) में अन्त्येष्टि संस्कार विधिवत् सम्पन्न हुआ। डॉ. धर्मवीर का जाना आर्य जगत् के लिये अपूरणीय क्षति है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करे एवं आर्यजगत् तथा परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

प्रमुखतम राजपुरुषों की योग्यता

राजा, सभा-समितियों के सदस्यों की योग्यता तथा चारित्रिक उच्चता की अनिवार्यता के संदर्भ में महर्षि दयानन्द के स्पष्ट मन्तव्य आज सर्वाधिक प्रासंगिक हैं। ऋषि दयानन्द केवल शैक्षणिक योग्यता की बात नहीं करते वरन् शासक वर्ग में जितेन्द्रियता तथा सत्यता जैसे नैतिक मूल्यों की उपस्थिति अनिवार्य मानते हैं। ऐसे में दिल्ली सरकार के एक मंत्री की यौनिक उच्छश्रृंखलता की सी.डी. और उसके समर्थन में एक अन्य नेता आशुतोष का बेशर्म समर्थन हिला के रख देता है। यह केवल एक पार्टी या एक राजनेता की बात नहीं है। सर्वत्र यही स्थिति दिखाई दे रही है जो अत्यधिक चिन्ताजनक है। स्पष्ट है मानव-निर्माण की आज जो प्रक्रिया है वह ऋषियों की परम्परा के विरुद्ध तथा दूषित है। इसको परिवर्तित करने हेतु समग्रक्रान्ति की आवश्यकता है जिसका दिग्दर्शन सत्यार्थप्रकाश में है।

–अशोक आर्य

योग्यता सापेक्षवाद महर्षि प्रणीत प्रजातंत्र की सफलता की कुंजी है। उनके द्वारा राजा, राजपुरुषों व प्रजा (निर्वाचक मण्डल) की योग्यता पर इतना अधिक जोर देने के बारे में श्री. बी. बी. मजूमदार ने Dayanand and his Political Thought में लिखा कि-

Swami Dayananda is so much obsessed with the requisite qualifications of members that he states: "Even a meeting of thousands of men can not be designated as Assembly, if they be destitute of such high virtues as self-control or truthful character, be ignorant of the Vedas and be men of not understanding like Sudras. Let no man abide by the law laid down by men who are altogether ignorant, and destitute of the knowledge of the Vedas, for whosoever obeys the law propounded by ignorant fools falls into hundreds of kinds of sin and vice. Therefore, let not ignorant fools be ever made members of the aforesaid three Assemblies- Political, Educational and Religious"

राजा तथा प्रजा के संबंध- राज्य में सुख शांति तभी तक रह सकती है जब तक राजा तथा प्रजा में सौहार्द स्थापित रहता है। अतएव आवश्यक है कि राजा (सभी राजपुरुष भी सम्मिलित) तथा प्रजा अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। आज सभी अधिकारों की बात तो करते हैं कर्त्तव्य की नहीं; इसीलिए शासन तथा जनता के बीच प्रायः असंतोष नजर आता है। महर्षि दयानन्द ने अपने राजनीतिक सिद्धान्तों में राजा-प्रजा के सुदृढ़ संबंध के लिए कुछ निर्देश प्रदान किये हैं, जिन पर सुराज्य की अवधारणा टिकी हुई है।

१. स्वामी दयानन्द प्रजा और राजा के आपसी संबंध के बारे में लिखते हैं- (राजा) प्रजा को अपने संतान के समान सुख देवे, और प्रजा अपने पिता के सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने।

२. वेद के एक मंत्र (यजु. २०-८) से हमें राजा का प्रजा के साथ संबंधों का पता चलता है। राज्याभिषेक के समय राजा से मंत्र बुलाया जाता था-

पुष्टीर्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी।
ऊरूऽरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः॥

भाव यह कि राजा कोई अलग वस्तु नहीं। राजा का शरीर राष्ट्र है और प्रजाओं से मिलकर बना है। राष्ट्र उसका पृष्ठ वंश है नाना प्रकार की प्रजाएँ उसके नाना अंग हैं।

३. महर्षि व्यास जी ने भी कहा है-

राजा प्रजानां हृदयं भरीयः प्रजाश्च राज्ञोऽप्रतिम शरीरम्।

अर्थात् प्रजा राजा का शरीर है और राजा उसके शरीर में हृदय के समान है।

४. 'राजा' उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्त्ते और उनको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

'प्रजा' उसको कहते हैं कि जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण कर के पक्षपातरहित न्यायधर्म के सेवन से, राजा और प्रजा की उन्नति चाहती हुई, राजविद्रोहरहित राजा के साथ पुत्रवत् वर्त्ते। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश १७, १८)

५. यथायशः प्रजापतौ= जैसा यश प्रजापालक राजा में .... (अथर्व. १०/१/२४)

६. वेदानुकूल होकर प्रजा के साथ पिता के समान वर्तें। (सत्यार्थ प्रकाश समु. ६)

७. प्रमादरहित होकर अपनी प्रजा का पालन निरन्तर करें। (सत्यार्थ प्रकाश समु. ६)

८. राजाओं का प्रजापालन ही करना परम धर्म है। (सत्यार्थ प्रकाश समु. ६)

९. जो-जो प्रजा के पालने और वृद्धि करने का प्रकार है, उनको सीख के न्यायपूर्वक सब प्रजा को प्रसन्न रक्खें। दुष्टों को यथायोग्य दण्ड, श्रेष्ठों के पालन का प्रकार, सब प्रकार सीख लें। (सत्यार्थ प्रकाश समु. ३)

ooo

सम्पादक- अशोक आर्य

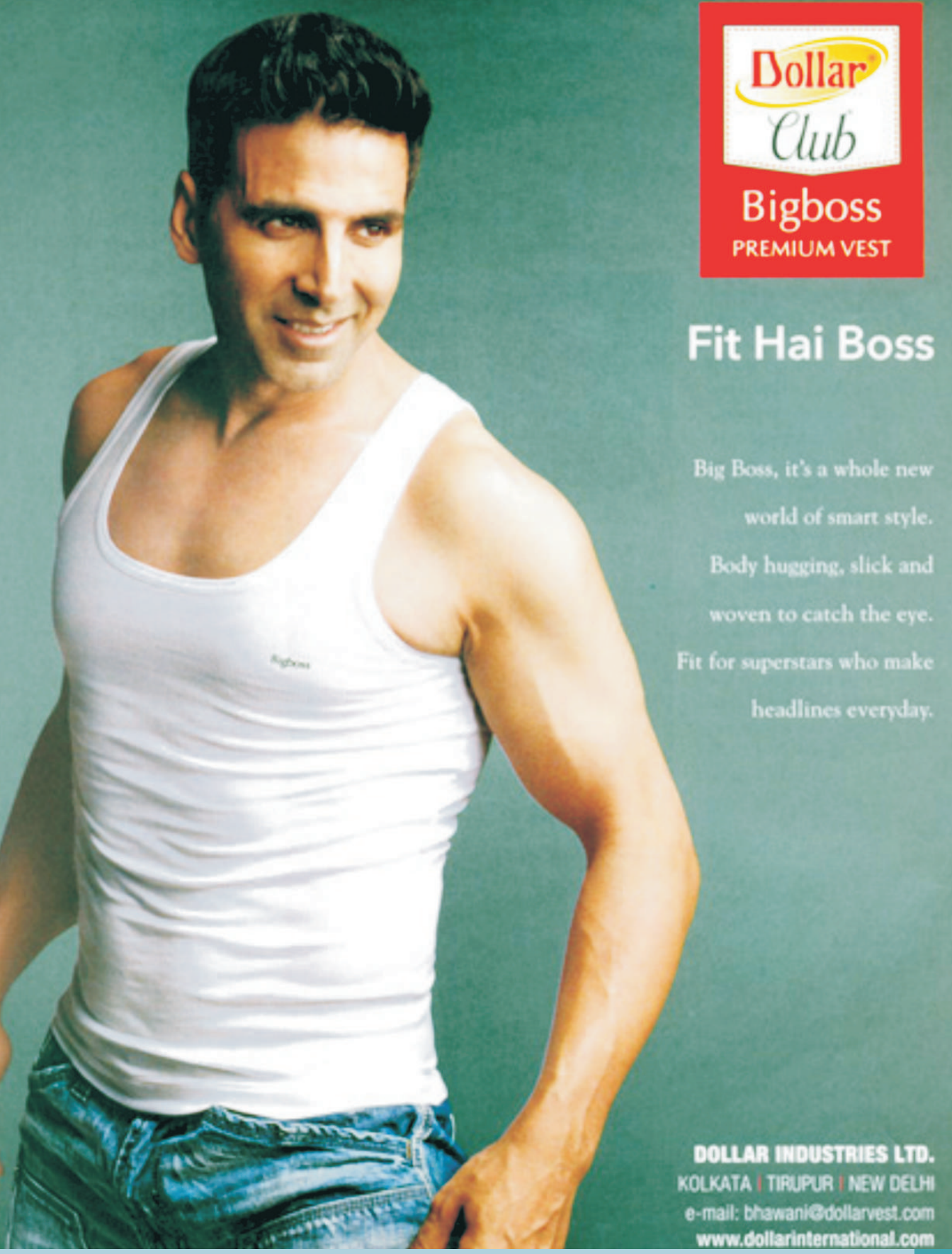
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

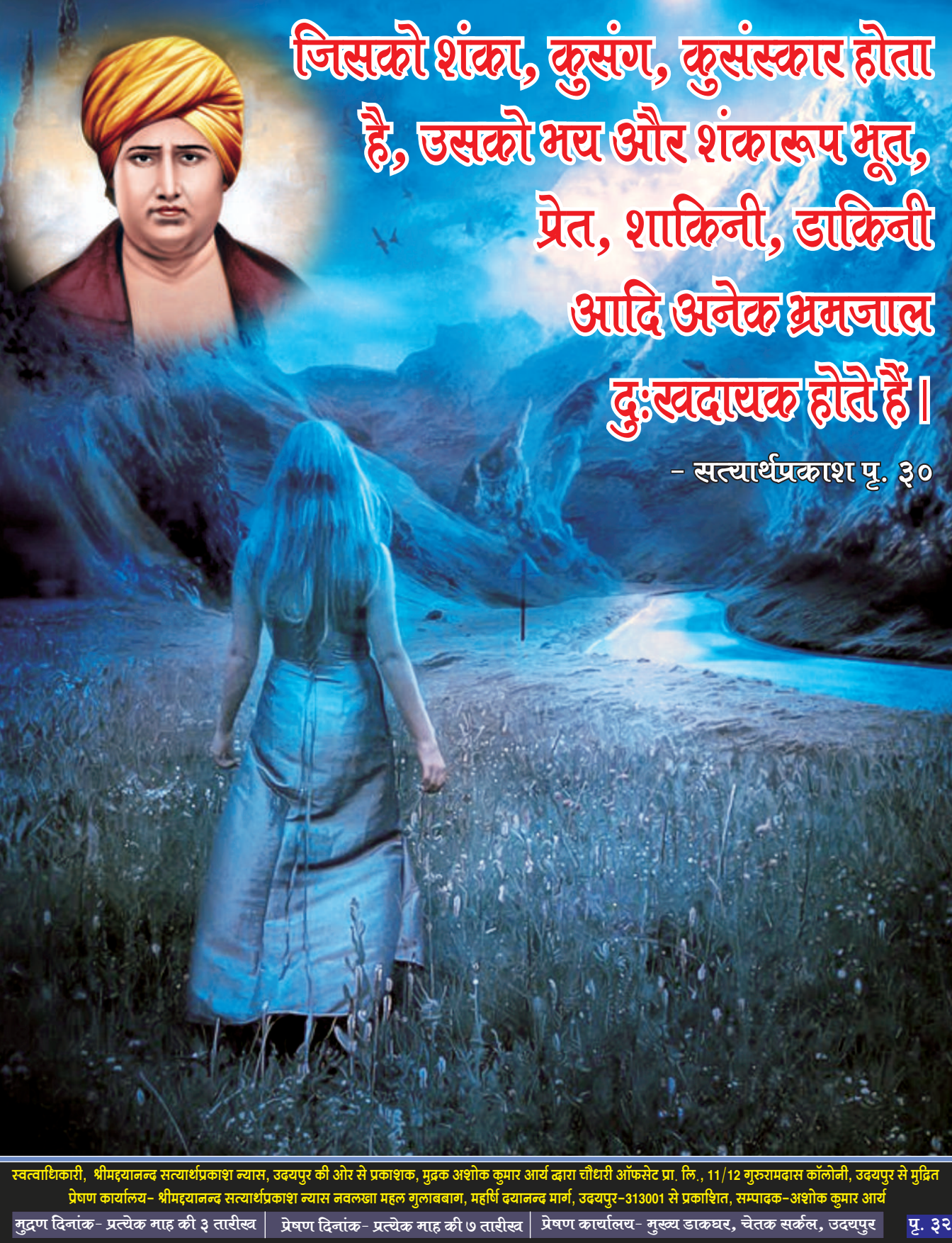

जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है, उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर